सांध्य दैनिक 4PM

जिद...सच की

www.4pm.co.in | www.facebook.com/4pmnewsnetwork | @Editor_SanjayS | YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्ष: 11 ● अंक: 349 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, बुधवार 28 जनवरी, 2026

मूल्य ₹ 3/-

किसी को सिर्फ अपने धर्म का सम्मान और दूसरों के धर्म की निंदा नहीं करनी चाहिए।
-अशोक महान

भारत का न्यूजीलैंड से चौथा टी20... 7 | एसआईआर पर अभी और बढ़ेगा... 3 | आम जनता को परेशान कर रही... 2

प्लेन क्रैश में महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम अजीत पवार की मौत

अजीत पवार की मौत से दहल गयी महाराष्ट्र की राजनीति

» गुजरात के पूर्व सीएम विजय रूपानी की हवाई हादसे में मौत के बाद डिप्टी सीएम की मौत पर सवाल?

» पूरे देश से शोक संवेदानएं, महाराष्ट्र में तीन दिन का राजकीय शोक

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। भारतीय राजनीति का आसमान आज फिर धधक उठा है। गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री विजय रूपानी की हवाई दुर्घटना में मौत के कुछ ही समय बाद महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री और एनसीपी के प्रभावशाली नेता अजीत पवार की विमान हादसे में मौत ने पूरे भारतीय राजनीतिक ताने बाने को स्तब्ध कर दिया है।

बारामती में आज सुबह हुई इस दुर्घटना ने केवल पांच लोगों के परिवारों को हिला दिया बल्कि महाराष्ट्र में सत्ता के समीकरणों को भी झंझोर कर रख दिया है। अजीत पवार युवा और महत्वाकांक्षी नेता थे। एनडीए में शामिल होने के पीछे उनकी हसरत स्पष्ट थी। वह राजनीतिक शक्ति का विस्तार और महाराष्ट्र में रणनीतिक भूमिका चाहते थे। अब उनका असमय निधन न केवल राजनीतिक समीकरणों को बदलता है बल्कि कई सवाल भी खड़े करता है।

जो वार मुझ पर किये गये हैं वह आखिरी कील साबित होंगे

महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजीत पवार ने 28 जनवरी 2026 को सुबह करीब 8:57 बजे सोशल मीडिया एक्स पर लाला लाजपत राय को याद करते हुए एक भावुक पोस्ट शेयर की थी। यह पोस्ट प्लेन क्रैश से लगभग आधे घंटे पहले की थी जब वे बारामती जा रहे थे। पोस्ट में उन्होंने लाला लाजपत राय को पंजाब के शेर कहकर श्रद्धांजलि दी जिसमें उनकी ही कही बात लिखी थी जो वार मुझ पर किए गए है वह भारत में ब्रिटिश शासन के ताबूत की आखिरी कील साबित होंगे। अजीत पवार जिला परिषद चुनाव प्रचार के लिए बारामती जा रहे थे जब उनके प्राइवेट जेट ने लैंडिंग के दौरान क्रैश कर लिया।

धुरंदर नेता की छवि

अजीत पवार के करियर में कई ऐसे मोड़ आए जब लगा कि उनका राजनीतिक सफर थम जाएगा लेकिन हर बार उन्होंने अपनी रणनीति से सबको चौंका दिया। चाहे वह सुबह-सुबह राजभवन में शपथ लेना हो या फिर अपनी अलग पार्टी बनाकर सत्ता में हिस्सेदारी पाना अजीत पवार ने साबित किया है कि महाराष्ट्र की राजनीति उनके इर्द-गिर्द ही घूमेगी।

क्या होगा एनसीपी का?

अजीत पवार के जाने के बाद उनकी पार्टी एनसीपी का क्या होगा? यह बड़ा सवाल मुह बाये खड़ा है। राष्ट्र वादी कांग्रेस पार्टी का चुनाव निशान घड़ी है और ऐसा लग रहा है कि इस घड़ी की सुइयां रुक गयी यह वही पार्टी है जिसे उनके चाचा शरद पवार ने स्थापित किया और राजनीतिक विरासत पर अपना दावा ठोकते हुए अजित पवार इसके अध्यक्ष बन गए थे। हालांकि निकाय चुनाव में पवार परिवार एकजुट होता दिखा था और चर्चा थी कि अब दोनों धड़े साथ आ जाएंगे। अब अजित पवार के निधन ने न सिर्फ पवार परिवार को बड़ा झटका लगा है बल्कि महाराष्ट्र की राजनीति में एक बड़ा शून्य पैदा हो गया है। अब देखना यह होगा कि अजित पवार की गैरमौजूदगी और शरद पवार की कम सक्रियता के बीच एनसीपी का क्या होता है।

प्रियंका गांधी ने भी किया याद

कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी वाड्रा ने अजित पवार के निधन को भारतीय राजनीति के लिए अपूरणीय क्षति बताया। उन्होंने कहा कि वैचारिक मतभेद अपनी जगह होते हैं लेकिन दुख की इस घड़ी में पूरा देश उनके परिवार के साथ खड़ा है। शरद पवार गुट और अजित पवार गुट दोनों ही खेमों में गहरा शोक देखा गया। एनसीपी कार्यालयों में झंडे आधे झुके रहे और कार्यकर्ताओं की आंखें नम रहीं।

राजनीतिक जगत में शोक की लहर, अजीत पवार का जाना अपूरणीय क्षति

राजनीतिक जगत में शोक की लहर दौड़ गई है। केन्द्रीय मंत्री नितिन गडकरी और पीयूष गोयल समेत कई वरिष्ठ भाजपा नेताओं ने अजित पवार के परिवार से मुलाकात कर गहरा दुख व्यक्त किया। गडकरी ने कहा है कि अजित पवार का जाना सिर्फ एक नेता का नहीं बल्कि एक ऐसे प्रशासक का जाना है जिसने महाराष्ट्र की राजनीति को दशकों तक दिशा दी।

राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री ने शोक जताया

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी शोक संदेश जारी किए। राष्ट्रपति ने कहा कि अजित पवार का सार्वजनिक जीवन अनुशासन, प्रशासनिक क्षमता और राजनीतिक दृढ़ता का उदाहरण रहा है। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने संदेश में कहा कि अजित पवार ने महाराष्ट्र के विकास में अहम भूमिका निभाई।

उनका अचानक जाना बेहद पीड़ादायक है। महाराष्ट्र विधानसभा से लेकर संसद परिसर तक हर जगह शोक सभाएं आयोजित की गईं। नेताओं ने एक स्वर में कहा कि अजित पवार की राजनीति भले ही विवादों और तीखे फैसलों से भरी रही हो लेकिन उनकी निर्णय क्षमता और जमीनी पकड़ पर कभी सवाल नहीं उठा। सिंचाई वित्त और उपमुख्यमंत्री जैसे अहम पदों पर रहते हुए उन्होंने राज्य की राजनीति में अपनी अलग छाप छोड़ी।

मेरे लिए व्यक्तिगत क्षति : फडणवीस

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने पवार के राज्य और जनता के प्रति योगदान को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए तीन दिनों के राजकीय शोक की घोषणा की। देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजित पवार का विमान दुर्घटना में निधन हो गया है। राज्य में मातम का माहौल है। उनके जैसे नेता को खोना एक अभूतपूर्व क्षति है। फडणवीस ने कहा कि व्यक्तिगत जीवन में वे मेरे अच्छे मित्र थे। हमने कई चुनौतियों का एक साथ सामना किया।

अजित पवार की मृत्यु के मामले में जांच होगी : एकनाथ शिंदे

महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने बुधवार को विमान हादसे में अपने सहयोगी उपमुख्यमंत्री अजित पवार की मृत्यु को दुखद और दुर्भाग्यपूर्ण बताया। उन्होंने कहा कि जिस विमान दुर्घटना में पवार की जान गई, उसकी जांच की जाएगी। शिंदे ने पत्रकारों से बातचीत में पवार के योगदान की सराहना की, जिन्होंने विभिन्न मंत्रिमंडलों में उनके सहयोगी के रूप में कार्य किया और 2022 से 2024 तक शिंदे के नेतृत्व में महाराष्ट्र सरकार में उपमुख्यमंत्री भी रहे। उन्होंने कहा, "यह बहुत पीड़ादायक घटना है.. महाराष्ट्र के लिए बहुत दुखद और दुर्भाग्यपूर्ण है। विमान दुर्घटना की जांच की जाएगी। शिंदे ने कहा 'यह क्षति केवल पवार परिवार की नहीं बल्कि पूरे राज्य की है। ऐसा लग रहा है जैसे मैंने अपने बड़े भाई को खो दिया हो।

आम जनता को परेशान कर रही है भाजपा व चुनाव आयोग : अखिलेश

बोले सपा प्रमुख- एसआईआर की आड़ में एनआरसी चला रहे हैं

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। पश्चिम बंगाल में विधानसभा चुनाव 2026 के लिए सियासी बिसात बिछने लगी है। इंडिया गठबंधन व एनडीए दोनों ने एक तरह से चुनावी प्रचार की प्रक्रिया चालू कर दी है। इसी क्र म यूपी के पूर्व सीएम व सपा प्रमुख अखिलेश यादव बंगाल की यात्रा पर हैं। श्री यादव ने कहा कि चुनाव आयोग की जिम्मेदारी है कि वह मतदान में वृद्धि सुनिश्चित करे, लेकिन पहली बार ऐसा देखा जा रहा है कि चुनाव आयोग और भाजपा, एसआईआर की आड़ में, एनआरसी चला रहे हैं और आम जनता को परेशान कर रहे हैं, और उनका उद्देश्य अधिक वोटों की कटौती करना है। जबकि उनकी जिम्मेदारी मतदाताओं की मदद करना है।

समाजवादी पार्टी (एसपी) के प्रमुख अखिलेश यादव ने दावा किया कि भारतीय चुनाव आयोग (ईसीआई), सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के साथ मिलकर, विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) की आड़ में राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (एनआरसी) अभियान चला रहा है और साथ ही आम जनता को परेशान कर रहा है। उन्होंने आगे दावा किया कि ईसीआई यह एसआईआर अभियान केवल पश्चिम बंगाल के लिए चला रहा है। पश्चिम बंगाल में विधानसभा चुनाव 2026 के पहले छमाही में होने की उम्मीद है।

ममता बनर्जी पूरे देश में भाजपा को टक्कर दे रही

उन्होंने पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी की प्रशंसा करते हुए कहा कि पूरे देश में अगर कोई भाजपा को टक्क र दे रहा है, तो वह ममता बनर्जी ही हैं। यादव ने विश्वास व्यक्त किया कि पश्चिम बंगाल की जनता भाजपा को हराएगी और ममता बनर्जी फिर से मुख्यमंत्री बनेंगी। अगर कोई भाजपा को टक्कर दे रहा है, तो वो मुख्यमंत्री ममता बनर्जी हैं। भाजपा द्वारा लाया गया एसआईआर (विशेष गहन पुनरीक्षण) केवल पश्चिम बंगाल के लिए है, हालांकि इसे बिहार में भी लागू किया गया था।

सपा प्रमुख ने कहा कि जब भी चुनाव होते हैं, चुनाव आयोग अधिक से अधिक लोगों को मतदान करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु अभियान चलाता है, लेकिन एसआईआर के नाम पर ठीक उल्टा हो रहा है। बंगाल में एसआईआर के नाम पर

बंगाल की जनता भाजपा को हराएगी

मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को परेशान किया जा रहा है। देश में अतीत में एसआईआर के नाम पर किसी को परेशान नहीं किया गया। मुझे विश्वास है कि वह फिर से मुख्यमंत्री बनेंगी। बंगाल की जनता भाजपा को हराएगी। वे हमारे देश की धर्मनिरपेक्षता के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। उत्तर प्रदेश में अधिक वोट काटे जा रहे हैं। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने ईडी को हरा दिया है। भाजपा पेन ड्राइव कांड के दर्द से उबर नहीं पाई है।

समावेशी प्रतिनिधित्व के दावे खोखले : राम गोपाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। समाजवादी पार्टी के सांसद राम गोपाल यादव ने बुधवार को यूजीसी के नए दिशानिर्देशों पर चिंता जताते हुए समावेशी प्रतिनिधित्व के दावे पर सवाल उठाया। उन्होंने कहा कि दिशानिर्देशों में प्रस्तावित समिति के माध्यम से समाज के सभी वर्गों को शामिल करने की बात कही गई है, लेकिन ईडब्ल्यूएस कोटा जैसे लाभ पहले से ही सवर्ण वर्ग के लिए आरक्षित हैं। उन्होंने सवाल उठाया कि क्या वास्तव में सही मायने में समावेश सुनिश्चित किया जा रहा है।

» सपा सांसद ने यूजीसी के नए दिशा-निर्देशों पर चिंता जताई

» बोले- ईडब्ल्यूएस कोटा जैसे लाभ पहले से ही सवर्ण वर्ग के लिए आरक्षित हैं

यादव ने कहा, समाज के सभी वर्गों को इसमें शामिल किया गया है। कहा गया है कि प्रभावित होने वाले लोगों की जांच के लिए एक समिति गठित की जाएगी। मुट्ठी भर लोग हैं जो देश की सभी नौकरियां हथियाना चाहते हैं, और यह उन्हीं के लिए है। ईडब्ल्यूएस पूरी तरह से स्वर्ण वर्ग के लिए आरक्षित है। तो क्या वे इसमें शामिल हैं? यह बयान यूजीसी द्वारा 13 जनवरी को अधिसूचित नए नियमों के बाद आया है, जो इसी विषय पर 2012 के नियमों को अद्यतन करते हैं। इन नियमों की सामान्य वर्ग के छात्रों ने व्यापक आलोचना की है, जो तर्क देते हैं कि यह ढांचा उनके साथ भेदभाव का कारण बन सकता है। कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में जाति आधारित भेदभाव को रोकने के लिए लागू किए गए नए नियमों के तहत संस्थानों को विशेष समितियां और हेल्पलाइन स्थापित करने की आवश्यकता है ताकि विशेषकर अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अन्य पिछड़ा वर्ग के छात्रों की शिकायतों का समाधान किया जा सके।

यूजीसी का विरोध करने वाले गुमराह करने का काम कर रहे : चंद्रशेखर

» सांसद ने कहा- इसको और सख्त किए जाने की जरूरत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बिजनौर। यूजीसी के नए नियमों को लेकर मचे घमासान के बीच आज़ाद समाज पार्टी के मुखिया और नगीना सीट से सांसद चंद्रशेखर आजाद का बड़ा बयान सामने आया है। उन्होंने यूजीसी के नए नियमों का समर्थन किया है और कहा कि जो लोग इसका विरोध कर रहे हैं वो लोगों को गुमराह करने का काम कर रहे हैं। इन नियमों को और सख्त करने की ज़रूरत है।

नगीना सांसद ने यूजीसी की गाइड लाइंस का समर्थन किया। यूजीसी की गाइडलाइंस के बारे में किसी को कुछ पता ही नहीं है। इसमें तो कुछ भी नहीं है इसको तो और सख्त किए जाने की जरूरत है। इससे पहले आगरा में भी आसपा की रैली में चंद्रशेखर आजाद ने यूजीसी के नए नियमों का स्वागत किया था। उन्होंने इस रैली में उन्होंने कहा कि अभी यूजीसी के नए नियम आए हैं जो काफी चर्चा में बने हुए हैं। मैं स्पष्ट करना चाहता हूं कि इनका वहीं विरोध कर रहा है जो जाति के आधार पर एससी, एसटी और ओबीसी के बच्चों का शोषण करने का काम कर रहा है। चंद्रशेखर ने कहा कि इससे किसी को दिक्कत नहीं है सिर्फ द्रोणाचार्य के जो एकलव्य का अंगूठा काटना चाहता है. मैं सरकार से कहना चाहता हूं कि अगर चंद मुट्ठीभर लोगों की वजह से अगर यूजीसी का फैसला वापस हुआ तो हम 75 फ़ीसद बहुजन समाज के लोग सड़कों पर उतरेंगे।

असम की जनता जवाबदेही के लिए वोट करेगी : पवन खेड़ा

» कांग्रेस नेता ने सीएम हिमंता बिस्वा सरमा को घेरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी की पूर्वोत्तर के संकटकालीन समय में वहां के लोगों के साथ खड़े रहने की सराहना की, वहीं उन्होंने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की ध्यान भटकाने वाली रणनीति की कड़ी आलोचना की। खेड़ा ने इस बात पर और जोर दिया कि असम के मतदाता दिखावे की बजाय जवाबदेही को प्राथमिकता देंगे। उन्होंने अपने पोस्ट का समापन करते हुए कहा कि असम दिखावे के लिए वोट नहीं दे रहा है। यह जवाबदेही के लिए वोट दे रहा है। और यही भाजपा की ध्यान भटकाने वाली रणनीति को स्पष्ट करता है।

खेड़ा ने गांधी की पूर्वोत्तर के नागरिकों से बातचीत करते हुए तस्वीरें साझा कीं और चुनौतीपूर्ण समय में इस क्षेत्र के लिए खड़े होने में कांग्रेस नेता के चरित्र और नैतिक साहस की प्रशंसा की। पूर्वोत्तर की मदद में कांग्रेस के प्रयासों पर प्रकाश डालते हुए, खेड़ा ने आरोप लगाया कि भाजपा-आरएसएस तंत्र ने मणिपुर हिंसा और जुबीन गर्ग की मौत की जांच का हवाला देते हुए, सात बहनों के लिए शांति और सम्मान को सक्रिय रूप से नष्ट किया है। खेड़ा ने असम के मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा की सीधी आलोचना करते हुए उन पर राज्य की गंभीर समस्याओं को नजरअंदाज करते हुए दिखावे की आड़ में छिपने का आरोप लगाया।

राहुल गांधी ने पूर्वोत्तर के हमारे भाइयों और बहनों के साथ खड़े होने का साहस और नैतिक साहस दिखाया है – मणिपुर के साथ, जो प्रधानमंत्री की अनुपस्थिति और चुप्पी के बीच जल रहा था; जुबीन गर्ग के परिवार के साथ, जो अभी भी जवाब का इंतजार कर रहा है; और एंजेल चकमा के परिवार के साथ, जो अभी भी न्याय के लिए गुहार लगा रहा है। खेड़ा ने आगे लिखा, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि हिमंता बिस्वा दिखावे की आड़ में छिप रहे हैं क्योंकि उन्हें पता है कि उनके दिन गिने-चुने हैं। पूर्वोत्तर शांति, न्याय, रोजगार और अपनी समृद्ध और जटिल संस्कृति के सम्मान की मांग करता है – ये वो चीजें हैं जिन्हें भाजपा-आरएसएस के तंत्र ने सक्रिय रूप से नष्ट कर दिया है।

एसवाईएल पर लोगों के हितों से खिलवाड़ हो रहा : राव नरेंद्र

» कांग्रेस प्रदेश ने भाजपा पर निशाना साधा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। एसवाईएल के मुद्दे को लेकर पंजाब और हरियाणा के मुख्यमंत्रियों (भगवंत मान और नायब सिंह सैनी) की बैठक को हरियाणा कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह ने निराधार और बैठकों का खेल बताया। कहा कि ऐसी बैठकों से जनता को गुमराह किया जा रहा है, क्योंकि सुप्रीम कोर्ट पहले ही हरियाणा के पक्ष में फैसला दे चुका है।

उन्होंने ने मांग की, कि हरियाणा सरकार को पंजाब सरकार के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में अवमानना (कंटेम्प्ट ऑफ़ कोर्ट) का मुकदमा दायर करना चाहिए। अब बातचीत का कोई औचित्य नहीं बचा है, क्योंकि कोर्ट का फैसला स्पष्ट है।

उन्होंने आरोप लगाया कि बीजेपी सरकार हरियाणा के पानी के हक की रक्षा करने में पूरी तरह नाकाम साबित हुई है। एसवाईएल पानी हरियाणा का अधिकार है, और इसे लेने के लिए ठोस कदम नहीं उठाए जा रहे। राव नरेंद्र सिंह ने कहां कि सुप्रीम कोर्ट का फैसला हरियाणा के पक्ष में है, इसलिए बैठकों की बजाय इसे लागू करवाना चाहिए। उन्होंने कहा हरियाणा का तर्क है कि उसे अदालत के निर्णय के तहत लगभग 3.5 एमएएफ का अधिकार है ,जो एसवाईएल बिना पूरा हुए प्राप्त नहीं हो पा रहा, और वह इसका पूरा हिस्सा चाहता है। उन्होंने कहा कि हरियाणा सिर्फ अपना हिस्सा मांग रहा है, और राजनीतिक दलों को एकजुट होकर इस मुद्दे पर दबाव बनाना चाहिए, लेकिन वर्तमान सरकार इसे गंभीरता से नहीं ले रही।

उन्होंने कहा की बेनतीजा बैठकों का यह खेल हरियाणा के हितों के साथ सरासर खिलवाड़ है। वहीं, राव नरेंद्र सिंह ने हाल ही में हुई ओलावृष्टि पर गहरी चिंता जताते हुए कहा कि इस प्राकृतिक आपदा से प्रदेश के कई इलाकों में किसानों की फसलें पूरी तरह तबाह हो गई हैं। अचानक आई ओलावृष्टि ने खेतों में खड़ी मेहनत को नष्ट कर दिया, जिससे किसान गंभीर संकट और चिंता के दौर से गुजर रहे हैं। उन्होंने सरकार से मांग की कि इस मामले में संवेदनशीलता दिखाते हुए तुरंत विशेष ध्यान दिया जाए तथा प्राथमिकता के आधार पर फसलों की गिरदावरी कराकर प्रभावित किसानों को शीघ्र मुआवजा अदा किया जाए, ताकि उन्हें इस कठिन समय में राहत मिल सके।

एसआईआर पर अभी और बढ़ेगा सिरदर्द

जहां-जहां एसआईआर वहां-वहां वोट चोरी!

- प्रशासन नहीं, सुनियोजित साजिश
- कांग्रेस समर्थक वोटरों पर निशाना
- एक व्यक्ति एक वोट' पर हमला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। एसआईआर का मुद्दा एकबार फिर चुनावी मुद्दा बनेगा। कांग्रेस से लेकर टीएमसी तक इसपर आक्रामक है। बता दें इस वर्ष असम, तमिलनाडु,केरल, बंगाल व पुडुचेरी में विधान सभा चुनाव है। भाजपा इन राज्यों सत्ता चाहती इसी वह एसआईआर करवा रही है। विपक्ष का आरोप है कि एसआईआर के जरिये वह वोट कटवा रही है साथ ही ईवीएम से वोट चोरी करवा रही है।

भारत का लोकतंत्र दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। जहां हर नागरिक का एक वोट महत्वपूर्ण होता है। लेकिन हाल के वर्षों में, चुनाव आयोग द्वारा चलाए जा रहे स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन प्रोग्राम पर गंभीर आरोप लग रहे हैं। एसआई का मकसद मतदाता सूची को साफ-सुथरा बनाना है लेकिन विपक्षी दल, खासकर कांग्रेस, इसे वोट चोरी का हथियार बता रहे हैं। गुजरात में यह मुद्दा सबसे ज्यादा चर्चा में है। जहां लाखों नाम मतदाता सूची से हटाए गए हैं। राहुल गांधी जैसे नेता कहते हैं कि भाजपा और चुनाव आयोग मिलकर खास वर्गों के वोटर्स को हटा रहे हैं। ताकि चुनावों में फायदा मिले। आपको बता दें कि स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन चुनाव आयोग की एक विशेष प्रक्रिया है, जो मतदाता सूची को अपडेट करने के लिए चलाई जाती है इसमें घर-घर जाकर जांच होती है। डुप्लिकेट नाम, मृत व्यक्ति, स्थानांतरित हुए लोग या विदेशी नागरिकों को हटाया जाता है। यह सामान्य संशोधन से अलग है, क्योंकि इसमें गहन जांच होती है जैसे दस्तावेजों की सख्त जांच और फॉर्म 7 के जरिए आपत्तियां दर्ज करना। चुनाव आयोग के मुताबिक, एसआईआरका उद्देश्य चुनावों को निष्पक्ष बनाना है, लेकिन विपक्ष का कहना है कि यह प्रक्रिया अब राजनीतिक हथियार बन गई है। गुजरात में एसआईआर दिसंबर 2025 में शुरू हुआ और जनवरी 2026 तक चला, जहां ड्राफ्ट लिस्ट जारी होने के बाद लाखों आपत्तियां आईं।

राहुल गांधी और कांग्रेस के आरोप सबसे तीखे

राहुल गांधी और कांग्रेस के आरोप सबसे तीखे हैं। राहुल गांधी ने कई बार कहा कि एसआईआरएक व्यक्ति, एक वोट के संवैधानिक अधिकार को खत्म कर रहा है। उन्होंने बिहार, महाराष्ट्र, गुजरात और राजस्थान में पैटर्न बताया। जहां भाजपा को हार दिखती है, वहां वोटर्स गायब हो जाते हैं। गुजरात में उन्होंने कहा कि भाजपा अपनी पसंद की मतदाता सूची बना रही है। पिछड़ों और दलितों को हटा रही है। कांग्रेस ने दावा किया कि नवसारी लोकसभा क्षेत्र (सीआर पाटिल का) की चोरयासी विधानसभा में 6.09 लाख वोटर्स में से 30,000 फर्जी हैं। डुप्लिकेट नाम, स्पेलिंग गलतियां, पता बदलकर दोबारा नाम दर्ज कराए गए हैं पूरे गुजरात में 62 लाख से ज्यादा फर्जी नाम हो सकते हैं। राहुल ने 2023 मध्य प्रदेश चुनावों में भी 30-35 लाख वोटों की कमी को एसअसई से जोड़ा। उन्होंने कहा कि चुनाव आयोग अब लोकतंत्र का रक्षक नहीं, बल्कि साजिश का हिस्सा है। कांग्रेस ने पत्र लिखकर आपत्तियों की जानकारी मांगी, लेकिन जवाब नहीं मिला।

चुनाव आयोग ने कांग्रेस नेता को घेरा

चुनाव आयोग कहता है कि एसआईआर एक कानूनी प्रक्रि या है। जो मतदाता सूची को सटीक बनाती है। राहुल गांधी के आरोपों पर आयोग ने कहा कि वे एसआईआर का समर्थन करते हैं या विरोध। क्योंकि एसआईआर डुप्लिकेट वोटर्स हटाती है बिहार में 65 लाख नाम हटे, लेकिन कांग्रेस ने एक भी अपील नहीं की, आयोग ने हरियाणा में भी कहा कि डुप्लिकेट वोटर्स पर कोई सबूत नहीं दिए गए गुजरात में आयोग ने कहा कि प्रक्रिया पारदर्शी है। आपत्तियां जांच के बाद ही स्वीकार होती हैं। लेकिन विपक्ष कहता है कि आयोग डिलीटेड वोटर्स का ब्रेकडाउन नहीं देता कितने माइनॉरिटी, कितने दलित? सुप्रीम कोर्ट ने भी जनवरी 2026 में आयोग से पूछा कि माइग्रेशन का बहाना क्यों जबकि भाजपा कहती है विदेशी घुसपैठिए हटाए जा रहे हैं आयोग का कहना है कि यह चुनावों से पहले जरूरी है लेकिन बीएलओ की खुदकुशी जैसी घटनाएं दबाव दिखाती हैं।

एक वोट का अधिकार खतरे में

वहीं एक व्यक्ति, एक वोट का अधिकार खतरे में है। गरीब, कम पढ़े-लिखे लोग दस्तावेज नहीं दिखा पाते, तो नाम कट जाता है। राष्ट्रीय मतदाता दिवस अब संघर्ष का प्रतीक बन गया है, विपक्ष कहता है कि आयोग भाजपा का एजेंट बन गया जो चुनावों को प्रभावित करता है। बिहार में 128 सीटें एनडीए ने एसआईआर डिलीट से जीतीं। अगर ऐसा चला, तो जनता नहीं, पार्टी तय करेगी कौन जीतेगा। कांग्रेस ने डोर-टू-डोर जांच और वोट अधिकार जनसभा शुरू की है। सुप्रीम कोर्ट की सुनवाई से उम्मीद है कि पारदर्शिता आएगी।

आपको बता दें कि एसआईआर जरूरी है, लेकिन अगर इसमें राजनीति घुसी। तो लोकतंत्र कमजोर होगा, गुजरात का मामला पूरे देश को सतर्क करता है, जनता को जागरूक रहना चाहिए, अपना नाम चेक करें और आपत्ति दर्ज करें। तभी एक व्यक्ति, एक वोट बचेगा।

अन्य राज्यों में भी ऐसा पैटर्न

वहीं यह पैटर्न सिर्फ गुजरात तक नहीं है। अन्य राज्यों में भी ऐसा ही हो रहा है। तमिलनाडु में 97.27 लाख नाम हटे, 15 प्रतिशत कमी, राजस्थान में 41.85 लाख, मध्य प्रदेश में 40 लाख, बिहार में एसआईआर से 65 लाख हटे और एनडीए ने 2025 चुनाव जीते। पश्चिम बंगाल में 58 लाख नाम हटे। और लॉजिकल डिस्क्र पेंसी कैटेगरी से 1.36 करोड़ को सुनवाई का सामना करना पड़ा, उत्तर प्रदेश में कांग्रेस-सपा को डर है कि 43 लोकसभा सीटों पर 50,000 वोट हटे सभी जगह आरोप एक- माइनॉरिटी, महिलाएं, दलित, आदिवासी टारगेट हो रहे है। भाजपा कहती है कि यह फेक वोटर्स हटाने से है, लेकिन विपक्ष कहता है कि एसआईआर अब एनडीए राज्यों में कम डिलीट दिखाता है जबकि विपक्षी राज्यों में ज्यादागुजरात जैसे भाजपा गढ़ में भी 14-15 प्रतिशत डिलीट से सवाल उठे।

गुजरात में एसआईआर की प्रक्रिया में आंकड़े चौंकाने वाले

गुजरात में एसआईआर की प्रक्रिया को देखें तो आंकड़े चौंकाने वाले हैं। आरटीआईसे मिली जानकारी के अनुसार गुजरात की मतदाता सूची में 5.08 करोड़ से घटकर 4.34 करोड़ रह गई। यानी 73.73 लाख नाम हटाए गए। यह 14-15 प्रतिशत की कमी है। जो 2002 के एसआईआर से बहुत ज्यादा है, 2002 में सिर्फ 60,494 नाम हटे थे और कुल सूची में 0.19 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई थी। इस बार शहरी इलाकों में सबसे ज्यादा प्रभाव पड़ा, जैसे सूरत में 25.7 प्रतिशत और अहमदाबाद में 23 प्रतिशत नाम हटे।

माइग्रेशन, डुप्लिकेट वोट और मौतें कारण बताए गए हैं। लेकिन आरोप है कि यह चुन-चुनकर किया गया। कांग्रेस विधायक जिग्नेश मेवानी ने खुलासा किया कि भाजपा कार्यालयों से फॉर्म 7 भेजकर 14-15 लाख कांग्रेस समर्थक वोटर्स के नाम हटाए गए। उनके अपने क्षेत्र में 24,000 और दरियापुर में 28-29,000 आपत्तियां दर्ज हुई, मकर संक्रांति के बाद अचानक लाखों फॉर्म 7 जमा हुए, जिनमें एक ही नाम से दर्जनों आपत्तियां थी। कांग्रेस का कहना है कि नाम किसी के हस्ताक्षर किसी के, लेकिन चुनाव आयोग चुप रहा।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma

@Editor_Sanjay

जिद... सच की

गणतंत्र में आमजन की भूमिका अब भी हासिए पर

हमने अपना 77वां गणतंत्र धूमधाम से मनाया। नई दिल्ली में देश ने अपनी सामरिक शक्ति का प्रदर्शन किया। पूरे देश में हर जगह कई कार्यक्र म किए गए। अब भी कई जगहों से ऐसी खबरें सुनने को मिलती है कई लोगों तक अब भी वैसी सुविधाएं नहीं पहुंची है जिसके दावे इस सरकार से लेकर पिछली सरकारे करती रही हैं। सही मायनों में गणतंत्र की मूल भावना को हमने आज तक समझा ही नहीं है। 'गणतंत्र' का अर्थ है शासन तंत्र में जनता की भागीदारी। हालांकि हम कह सकते हैं कि शासन तंत्र में जनता को पूर्ण भागीदारी मिली है किन्तु क्या यह वाकई पूर्ण सत्य है? देश का संविधान लागू होने के इन 76 वर्षों में भी क्या वास्तव में शासन तंत्र में जनता की भागीदारी सुनिश्चित हुई है?। जनता को यह तो अधिकार है कि मतदान के जरिये वह अपना जनप्रतिनिधि चुने किन्तु एक बार संसद अथवा विधानसभा के लिए निर्वाचित होने के बाद अगले पांच वर्षों तक इन जनप्रतिनिधियों पर उसका क्या कोई अंकुश रह जाता है? च्च

वास्तविकता यही है कि इसी प्रावधान का लाभ उठाते हुए राजनीतिक दल देश की जनता का चुनाव के समय महज एक वोटबैंक के रूप में इस्तेमाल करते आए हैं और अपना मतलब निकलने पर जनप्रतिनिधियों पर जनता के दुख-दर्द के बजाय अपने लिए सुख-सुविधाओं का अंबार जुटाने की चिंता सवार हो जाती है और वे इसी कवायद में जुट जाते हैं कि येन-केन-प्रकारेण अगले चुनाव के लिए कैसे करोड़ों रुपयों का इंतजाम किया जाए। अहम सवाल यह है कि जिस राष्ट्र में जनता की भागीदारी चुनाव में सिर्फ वोट डालने और उसके बाद चुने हुए जनप्रतिनिधियों के आचरण से शर्मसार होकर आंसू बहाने तक ही सीमित रह गई हो, वहां 'गणतंत्र' का भला क्या महत्व रह गया है? जब गरीबी व भुखमरी से त्रस्त करोड़ों लोग चंद रुपयों की खातिर या लाखों लोग महज दो-चार शराब की बोतलों के लिए अपने वोट बेच डालते हों या ईवीएम के दौर में भी कुछ मतदान केन्द्रों पर गुंडागर्दी के बल पर वोट डलवाये जाते हों?हालांकि इसमें कोई संशय नहीं कि हमें विशुद्ध रूप में एक प्रजातांत्रिक संविधान प्राप्त हुआ है, जिसमें प्रत्येक वर्ग, प्रत्येक समुदाय, प्रत्येक सम्प्रदाय के लोगों के लिए बराबरी के अधिकार के साथ-साथ व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से कुछ मूलभूत स्वतंत्रताओं की व्यवस्था भी की गई है, प्रत्येक नागरिक के लिए मूल अधिकारों का प्रावधान किया गया है किन्तु गणतांत्रिक भारत में पिछले 76 वर्षों के हालातों का विवेचन करें तो यही पाते हैं कि हमारे कर्णधार एवं नौकरशाह किस प्रकार संविधान के कुछ प्रावधानों के लचीलेपन का अनावश्यक लाभ उठाकर कदम-कदम पर लोकतांत्रिक मूल्यों को तार-तार करते रहे हैं।

हम कह सकते हैं कि शासन तंत्र में जनता को पूर्ण भागीदारी मिली है किन्तु क्या यह वाकई पूर्ण सत्य है? देश का संविधान लागू होने के इन 76 वर्षों में भी क्या वास्तव में शासन तंत्र में जनता की भागीदारी सुनिश्चित हुई है?। जनता को यह तो अधिकार है कि मतदान के जरिये वह अपना जनप्रतिनिधि चुने किन्तु एक बार संसद अथवा विधानसभा के लिए निर्वाचित होने के बाद अगले पांच वर्षों तक इन जनप्रतिनिधियों पर उसका क्या कोई अंकुश रह जाता है?

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

क्रिकेट को रिश्तों पर जमी बर्फ पिघलाने दें

ज्योति मल्होत्रा

भारत-बांग्लादेश संबंधों के मौजूदा संकट में रोचक पहलू यह कि समाधान हेतु उपयुक्त तमाम घटक उसमें ही मौजूद हैं। भारत के लिए अवसर है कि नकारात्मक सोच वाले उन सभी विरोधियों की बाजी पलट दें जो 1971 के बाद से दो मुल्कों के बीच बेहद खास रिश्तों का पराभव चाहते हैं। समाधान हेतु मुद्दों की सूची में शीर्ष पर क्रिकेट संकट है, जो एक पखवाड़े पहले हिंदू संगठनों द्वारा इंडियन प्रीमियर लीग में बांग्लादेशी क्रिकेटर मुस्तफिजुर रहमान के खेलने पर रोक लगाने की मांग से पैदा हुई। बीसीसीआई इस मांग पर झुक गई और युवा मुस्तफिजुर को हटाया गया। इससे क्रोधित हुए बांग्लादेशियों का गुस्सा थम नहीं रहा है। उन्होंने टी-20 विश्व कप में भारत के साथ मैच खेलने से इनकार कर दिया है, जिसमें कोलकाता के प्रतिष्ठित ईडन गार्डस स्टेडियम में होने वाला मैच भी एक है। उनकी मांग थी कि उनसे संबंधित क्रिकेट मैच, ठीक पाक की तरह, तटस्थ देश श्रीलंका स्थानांतरित किया जाए।

फिर, यहां एक विचार है। संभवत: बांग्लादेश संबंधित मैचों को दक्षिण भारत में स्थानांतरित कर दिया जाता, जहां पर बंगाली दर्शक कम होते हैं। संभव है उन्हें अमिताव घोष द्वारा पिछले दशकों में, बहुत डूबकर लिखे तीन नॉवेल (द शैडो लाइन्स, द हंग्री टाइड, गन आइलैंड) के झकझोर देने वाले विषय-वस्तु का इतनी गहराई से अहसास न हो। अब शीर्ष भाजपा नेतृत्व के लिए समय आ गया है कि बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी (बीएनपी) से राब्ता बनाएं -और बीएनपी भी यही करे- हालांकि बीएनपी प्रमुख, तारिक रहमान, इन दिनों 12 फरवरी को होने वाले चुनावों की तैयारी के लिए रैलियों-बैठकों के साथ देश का तूफानी दौरा कर रहे हैं। आखिरकार, यदि आरएसएस चीन की कम्युनिस्ट पार्टी से बात कर सकती है, तो शेष कुछ भी संभव है। यह विचार दोनों पक्षों के लिए है कि अपना चेहरा बचाएं, ठंडे दिमाग वालों को वार्ता करने दें ताकि गर्म दल वाले अवसर हथिया न सकें। हमारे द्विपक्षीय इतिहास में इससे भी बदतर घटित हुआ है।

वास्तव में, 1971 में बना उत्साह लंबे समय तक टिका नहीं; चार साल से भी कम अवधि में, 15 अगस्त, 1975 को, बांग्लादेशी फिर से बांग्लादेशियों का कत्ल कर रहे थे। वर्तमान में लौटते हुए। आज की कहानी अब मुस्तफिजुर रहमान और यहां तक कि उन शेख हसीना के बारे में और अधिक नहीं रही, जिन्होंने द प्रिंट को दिए अपने

साक्षात्कार में आगामी बांग्लादेशी चुनावों में आवामी लीग पर प्रतिबंध लगाने को 'बदलाव का रूप धरा अधिनायकवाद' बताया है। यह तथ्य कि उन्होंने दिल्ली स्थित विदेशी संवाददाता क्लब को एक वॉयस मैसेज जारी किया है, उसमें भी मूल रूप से वही संदेश था। (ऐसा कहा जा रहा है कि उनका क्लब में खुद मौजूद न रहना या वीडियो संदेश जारी न करना, उनसे बनी सहमति का एक हिस्सा है)। निस्संदेह, भारत-बांग्लादेश के बीच संबंध -अगस्त 2024 में हसीना के तख्ता पलट और हाल ही में बांग्लादेश में निर्दोष हिंदुओं की प्रतिशोध की भावना से की गई हत्याओं से बुरी तरह प्रभावित हुए हैं- क्षति नियंत्रण तुरंत शुरू न करना बहुत नुकसानदायक होगा। खालिदा जिया के अंतिम संस्कार में भारत की ओर से अंतिम श्रद्धांजलि देने के लिए विदेश मंत्री एस. जयशंकर ढाका गए थे। पिछले नवंबर में बांग्लादेश के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार खलीलुर रहमान भारत में अपने समकक्ष अजीत डोभाल से मिलने दिल्ली आए थे। दोनों तरफ दांव बहुत बड़ा लगा है। भारत को न केवल विभिन्न जनजातियों, धर्मों, कुलों और राजनीतिक दलों के मिश्रण वाले संवेदनशील उत्तर-पूर्व अंचल की सुरक्षा के लिए बल्कि पूर्वी दिशा के मुल्कों के साथ रिश्तों में हो रहे तेजी से बदलाव के बीच बांग्लादेश के साथ की जरूरत है। सिर्फ इसलिए नहीं कि अगले कुछ महीनों में पश्चिम बंगाल और असम में चुनाव होने हैं। दोनों राज्यों की सीमा बांग्लादेश से लगती है। कई लोग हसीना के अहंकार-कुशासन का हवाला देते हुए कहते कि उन्हें इसलिए उखाड़ फेंका गया। यह भी उतना ही सच है कि भारत ने बहुत कुछ नजरअंदाज किया, जिसमें यह तथ्य भी शामिल है कि शेख हसीना और बीएनपी का आपस में हमेशा बैर रहा है। बीएनपी ने दो बार राष्ट्रीय चुनाव का बहिष्कार किया, जिससे घरेलू राजनीतिक कलह बढ़ गई।

बीजेपी की, शेख हसीना भारत की पसंदीदा क्यों बनी रहीं, इसका कारण यह है कि वे वास्तव में धर्मनिरपेक्ष रहीं। वे हिंदू अल्पसंख्यकों को सुरक्षित रखने को महत्वपूर्ण समझती थीं, खुली वार्ता के अलावा सीमापारीय व्यापार के पक्ष में थीं। उन्होंने पाकिस्तान की आईएसआई के नेतृत्व वाले घातक लोगों को घुसने नहीं दिया। वे बंगाल की खाड़ी क्षेत्र में किस कदर नुकसान पहुंचा सकते थे कि उसके सामने धुरंधर फिल्म में दिखाया गया कथानक दार्जिलिंग चाय और वॉटरक्रेस सैंडविच परोसने वाली किटी पार्टी की तरह लगता।

भावनाओं के नियमन से उजाले की पगडंडी

आवश्यकता केवल इस बात की है कि हम आवेग में बहने के बजाय, उस ऊर्जा को सृजन में रूपांतरित कर सकें। नि:संदेह, जीवन की सार्थकता भावनाओं से पलायन करने में नहीं, बल्कि उन्हें उस पगडंडी में रूपांतरित कर देने में है, जो अंतर्मन के अंधेरे से निकलकर शाश्वत प्रकाश की ओर जाती हो।

डॉ. मधुसूदन शर्मा

पहाड़ों या घने जंगलों में लोगों के सतत आवागमन से कुछ रास्ते स्वत: ही बन जाते हैं। इन्हें हम पगडंडी कहते हैं। इनमें कुछ पगडंडियां सुगम होती हैं, जिन पर चलना आसान होता है। वहीं कुछ इतनी संकरी और उबड़खाबड़ होती हैं कि उन पर चलना एक चुनौती बन जाता है। कुछ पगडंडियां हमें हमारे गंतव्य स्थल तक पहुंचाती हैं तो कुछ भटकाव की भूल-भुलैया में छोड़ देती हैं। दरअसल, मानवीय भावनाओं का संसार भी कुछ ऐसी ही पगडंडियों से बना होता है। प्रसन्नता की पगडंडी हमें खिले हुए फूलों जैसी दुनिया में ले जाती है, जहां सौंदर्य के रिश्तों की अनूठी छटा बिखरी होती है। वहीं दुख की राह किसी घने अंधेरे जंगल में ले जाती है, जहां केवल निराशा और हताशा का वास होता है। भय की राहों पर आशंकाओं के कांटे बिछे होते हैं, तो क्रोध की राह अंगारों से दहक रही होती है।

यहां प्रश्न उठता है कि आखिर भावनाओं की इन पगडंडियों का उद्गम स्थल कहां है? कहां से यह कारवां शुरू होता है? आधुनिक विज्ञान मानता है कि भावनाओं का जन्म हमारे मस्तिष्क में होता है। मस्तिष्क में स्थित 'लिम्बिक सिस्टम' भावना का केंद्र होता है। इसमें विशेष रूप से अमिगडाला की भूमिका प्रमुख होती है, जो भय, क्रोध और आनंद जैसी तत्काल भावनाओं को जन्म देता है। साथ ही डोपामिन, सेरोटोनिन और ऑक्सिटोसिन जैसे रसायनों से भावनाओं का निर्धारण करता है। मनोविज्ञान इस विमर्श को थोड़ा सूक्ष्म रूप में परिभाषित करता है। इसके अनुसार भावनाएं हमारे विचारों से जन्म लेती हैं। अवचेतन मन में दबी हुई इच्छाएं, पुरानी यादें और गहरे संस्कार सुप्त अवस्था में रहते हैं, जो अचानक किसी उत्प्रेरक के मिलने पर भावना के रूप में फूट पड़ते हैं। कई बार किसी घटना के प्रति हमारा नजरिया भी भावनाओं को जन्म देता है। भारतीय दर्शन और अध्यात्म इसे और गहराई से देखता है। हमारे ऋषि-मुनियों ने कहा है कि भावनाओं का असली घर हमारा चित्त है, जो एक गहरे सरोवर की तरह है। इस सरोवर की तलहटी में हमारे पुराने संस्कार और वृत्तियां जमा रहती हैं।

जैसे शांत सरोवर में कंकड़ फेंकने से लहरें उठती हैं, वैसे ही संस्कारों के इस मानस सरोवर में जब बाहरी दुनिया का कोई विषय स्पर्श करता है, तो जो कंपन होता है, वही भावनाएं हैं और यहीं से जन्म होता है -भावनाओं की पगडंडी का। भावनाओं की पगडंडी के निर्माण के संदर्भ में श्रीमद्भगवद्गीता के अध्याय 2 के श्लोक 62 में भी एक श्लोक मिलता है— 'पहले मन में किसी विषय का चिंतन होता है, चिंतन से उस विषय में आसक्ति पैदा होती है। आसक्ति से कामना जन्म लेती है और जब कामना पूरी नहीं होती या उसमें बाधा पड़ती है, तो क्रोध जन्म लेता है। और इस तरह क्रोध की भावना की पगडंडी का निर्माण होता है।' दरअसल, इन पगडंडियों पर चलते हुए अक्सर हम दिशा-भ्रमित हो जाते हैं।

भावनाओं की जटिलता से निपटने के लिए अक्सर हमारी सहज प्रतिक्रिया उनके 'दमन' की हो जाती है। बचपन से ही हमें 'क्रोध न करने' या 'आंसू रोकने' का प्रशिक्षण दिया जाता है। हम समझते हैं कि भावनाओं का दमन कर देने से हम संयमित कहलाएंगे। जबकि सच्चाई यह है कि भावनाओं का जबरन दमन, बहते पानी पर कच्चा बांध बनाने जैसा है, जिसमें पानी क्षणिक रूप से रुक सकता है, परंतु उसका बढ़ता दबाव अंतत: किसी घातक मानसिक विस्फोट का कारण बनता है। तो फिर अप्रिय भावनाओं से निपटने का समाधान अगर दमन नहीं है तो दूसरा सही मार्ग क्या है? उत्तर है- 'उदात्तीकरण'। यहां यह समझना जरूरी है कि भावना, मूल रूप से, केवल एक 'ऊर्जा' है। विज्ञान का नियम है कि ऊर्जा को न तो पैदा किया जा सकता है और न ही नष्ट, उसे केवल रूपांतरित किया जा सकता है। ठीक इसी तरह, हमारी भावनाएं न अच्छी होती हैं, न बुरी; वे सिर्फ एक शक्ति हैं जो प्रवाहित होना जानती हैं। जीवन की कला इस पगडंडी को अवरुद्ध करने में नहीं, बल्कि इसकी दिशा ऊंचाई की ओर मोड़ देने में है। जब भावना की दिशा बदलती है, तो वही ऊर्जा जो पतन का कारण बन सकती थी, उत्थान का आधार बन जाती है।

इतिहास गवाह है कि जब-जब मनुष्य ने अपनी भावनाओं की दिशा बदली है, तब-तब साधारण व्यक्ति महामानव बना है। तुलसीदास जी का पत्नी के प्रति घोर 'मोह', उसके कर्कश व्यवहार से उनके चिंतन की दिशा बदलते ही शाश्वत 'भक्ति' में परिणत हो गया। वस्तुत: भावनाएं हमारे अस्तित्व का शाश्वत सत्य हैं। उनसे मुख मोड़ना, उनसे भयभीत होना या उन्हें शत्रु मानकर लड़ना व्यर्थ है। जो पगडंडी गहन अंधकार की ओर जाती है, सजगता और दिशा बदलते ही, वही प्रकाश के शिखर तक भी पहुंचा सकती है। आवश्यकता केवल इस बात की है कि हम आवेग में बहने के बजाय, उस ऊर्जा को सृजन में रूपांतरित कर सकें। नि:संदेह, जीवन की सार्थकता भावनाओं से पलायन करने में नहीं, बल्कि उन्हें उस पगडंडी में रूपांतरित कर देने में है, जो अंतर्मन के अंधेरे से निकलकर शाश्वत प्रकाश की ओर जाती हो।

बिना स्टीमर के घर पर बनाएं बाजार जैसे स्वादिष्ट मोमोज

मोमोज एक ऐसी डिश है, जिसका नाम सुनते ही हर किसी के मुंह में पानी आने लगता है। आजकल तो आपको हर गली-मोहल्ले में मोमोज की दुकान मिल जाएगी, जहां लोगों की भीड़ लगी रहती है। वैसे तो हर मौसम में हर कोई मोमोज को बड़े ही चाव से खाता है, मगर कई लोग इसे घर से बाहर खाने से बचते हैं, क्योंकि उन्हें लगता है कि बाहर के मोमोज बहुत ही अनहेल्दी होते हैं। ऐसे में अगर आप भी बाजार में बनने वाले मोमोज नहीं खाना चाहते तो आप बिना स्टीमर के ही मोमोज घर पर बना सकते हैं। घर पर बने मोमोज आपके स्वास्थ्य को नुकसान नहीं पहुंचाएंगे, और ये फ्रेश बने होंगे। ऐसे में आप मन भर पर मोमोज का लुत्फ उठा सकेंगे।

विधि

अगर आप बाजार जैसे मोमोज घर पर बनाना चाहती हैं तो सबसे पहले पहले की तरह मैदा गूंथ लें और इसे साइड में रखें। मैदा गूंथने के बाद अब स्टफिंग बनाने की तैयारी शुरू करें। अब एक पैन में तेल गर्म करें। उसमें अदरक-लहसुन पेस्ट डालकर हल्का भूनें। कटी हुई सब्जियां डालें और मध्यम आंच पर 5-7 मिनट तक भूनें। आखिर में इसमें स्वादानुसार नमक डालें। ध्यान रखें कि स्टफिंग की सब्जियों को बारीक काटें। अब सोया सॉस और काली मिर्च पाउडर डालकर अच्छी तरह मिलाएं। स्टफिंग तैयार है। स्टफिंग तैयार करने के बाद मैदे की छोटी लोइयां बनाएं और उन्हें पतला बेलें। छोटी-छोटी रोटी बनाकर स्टफिंग भरकर मोमोज को आकार दें। मोमोज बनाने के बाद इसे साइड में रख दें। इसके बाद एक गहरी कढ़ाई में थोड़ा पानी डालें और उसे उबालें। पानी में एक स्टैंड या प्लेट को ऐसे रखें, ताकि मोमोज पानी को न छुएं। प्लेट पर तेल लगाएं और मोमोज रखें। कढ़ाई को ढक्कन से अच्छी तरह ढक दें। मोमोज को 10-15 मिनट तक मीडियम आंच पर पकने दें, जब तक वे पारदर्शी न दिखने लगें। तैयार मोमोज को निकालें और चटनी के साथ परोसें।

सामान

2 कप मैदा, 1/2 चम्मच नमक, 1 कप पानी (आवश्यकतानुसार), 200 ग्राम कटी हुई सब्जियां (पत्तागोभी, गाजर, प्याज), 1/2 चम्मच काली मिर्च पाउडर, 1/2 चम्मच अदरक-लहसुन पेस्ट, 1 चम्मच सोया सॉस, 1 चम्मच तेल।

बच्चों को खुश करने के लिए खिलाएं दही सैंडविच

एक समय था जब बच्चे घर का बना भोजन करना पसंद करते थे, लेकिन आज समय बदल गया है। आज के बच्चे बाजार में मिलने पकवानों को खाना ज्यादा पसंद करते हैं। जब उन्हें घर का बना कुछ खाने को दिया जाए तो उनके काफी नखरे होते हैं। ऐसे में हर मां के सामने ये दिक्कत रहती है कि वो अपने बच्चे को ऐसा क्या खिलाएं, जिसे वो मन से खाए और उसका पेट भी भर जाए। खासतौर पर परेशानी सुबह का नाश्ता बनाने में आती है। अगर आप भी इसी बात से परेशान रहती हैं तो ये लेख आपके लिए है। ऐसे में हम आपको आसान तरीके से दही सैंडविच बनाना सिखाएंगे, ताकि आप अपने बच्चे को स्वादिष्ट नाश्ता खिला सकें। दही सैंडविच एक ऐसा नाश्ता है, जिसे आप कुछ ही देर में तैयार कर सकती हैं। आप चाहें तो इसे टिफिन में पैक भी करके भेज सकती हैं।

सामान

1 कप दही, ब्रेड, मक्खन, नमक, काली मिर्च पाउडर, चाट मसाला, 1 कटा हुआ प्याज, टमाटर, शिमला मिर्च, कटी हुई हरी धनिया।

विधि

दही सैंडविच बनाना काफी आसान है। इसके लिए सबसे पहले एक बड़े कटोरे में दही निकालें। अब इसे पूरी तरह से फेंट लें। फेंटने के बाद इसमें कटा हुआ प्याज, टमाटर और शिमला मिर्च डालें। सभी चीजों को मिक्स करने के बाद इसमें नमक, काली मिर्च पाउडर और हल्का सा चाट मसाला डालें। एक बार फिर इसे चमचे की मदद से सही से मिक्स करें। आखिर में इसमें कटी हुई धनिया पत्ती डालें। अब एक ब्रेड स्लाइस लेकर उसपर इस मिश्रण को लगाएं। सही से मिश्रण लगाने के बाद दूसरा ब्रेड इसके ऊपर रख दें। इसके बाद तवे को गर्म करके उस पर मक्खन लगाएं और फिर सैंडविच को सुनहरा होने तक सेकें। ये सैंडविच आप अपने बच्चे को जूस के साथ परोस सकती हैं। आप चाहें तो सैंडविच बनाने के लिए ब्राउन ब्रेड का इस्तेमाल कर सकती हैं।

हंसना मना है

दो महिलाएं एक फंक्शन में गईं। वहां पहली महिला जिस भी जगह बैठने लगती तो दूसरी महिला उसकी बैठने की जगह को अपने दुपट्टे से साफ कर देती। तब किसी ने दूसरी महिला से पूछा कि तू खुद की बजाय, इस औरत की जगह क्यों साफ कर रही है? तो वो महिला बोली, क्या करूं बहना? ये मेरी जेठानी है! और ये आज मेरी साड़ी पहन कर आई है।

गांव में आधार कार्ड बन रहा था।

कम्प्यूटर ऑपरेटर ने एक महिला से पूछा- तुम्हारे घरवाले का क्या नाम है? महिला बोली— हमारे यहां घरवाले का नाम नहीं लिया जाता। ऑपरेटर- कुछ हिंट दो मैं भर देता हूं। महिला बोली — 3 गंजी 3 गंजी। ऑपरेटर चकरा गया। तभी बगल में खड़ा एक लड़का बोला- छगनजी?

आजकल के बच्चों से तो मच्छर ज्यादा समझदार है... शाम होते ही घर तो आ जाते हैं...

कहानी — मूर्ख ऊंट

एक जंगल में शेर रहता था। कौआ, सियार और चीता उसके सेवक के रूप में हमेशा उसके साथ रहते थे। शेर रोज शिकार करके भोजन करता और ये तीनों उस बचे हुए शिकार से अपना पेट भरते थे। एक दिन उस जंगल में एक ऊंट आ गया, जो अपने साथियों से बिछड़ गया था। शेर ने कभी ऊंट नहीं देखा था। कौवे ने शेर को बताया कि आप इसका शिकार करके अपना पेट भर सकते हो। शेर ने कहा कि नहीं यह हमारा मेहमान है। मैं इसका शिकार नहीं करूंगा। शेर, ऊंट के पास गया और ऊंट ने उसे सारी बात बताई कि वो किस प्रकार अपने साथियों से बिछड़कर जंगल में पहुंचा। शेर ने कहा कि आप हमारे मेहमान हैं, आप इस जंगल में ही रहेंगे। कौआ, चीता और सियार इस बात को सुनकर मन ही मन ऊंट को कोसने लगे। जल्दी ही जंगल की घास और हरी पत्तियां खाकर वह तंदुरुस्त हो गया। एक दिन शेर की जंगली हाथी से लड़ाई हो गई जिससे बुरी तरह से घायल हो गया। वह कई दिन तक शिकार पर नहीं जा सका। जिससे कौआ, चीता व सियार कमजोर होने लगे। सियार ने शेर से कहा कि महाराज आप बहुत कमजोर हो गए हैं और अगर आपने शिकार नहीं किया, तो हालत और ज्यादा खराब हो सकती है। शेर ने कहा कि अगर तुम लोग किसी जानवर को यहां ले आओ, तो मैं अपना और तुम तीनों का पेट भर सकता हूं। सियार ने कहा कि हम ऊंट को यहां लेकर आ सकते हैं, आप उसका शिकार कर लीजिए। शेर को गुस्सा आ गया और बोला कि वह हमारा मेहमान है, उसका शिकार मैं कभी नहीं करूंगा। सियार ने पूछा कि अगर वो स्वयं आपके सामने खुद को समर्पित कर दे तो? शेर ने कहा तब तो मैं उसे खा सकता हूं। फिर सियार ने कौवे और चीते ने ऊंट से बोला कि महाराज बहुत कमजोर हो गए हैं। अगर महाराज हमें भी खाना चाहें, तो मैं खुद को उनके सामने समर्पित कर दूंगा। सियार की बात सुनकर ऊंट भी महाराज का भोजन बनने के लिए तैयार हो गया। चारों शेर के पास गए और तीनों ने अपने को खा जाने की बात कही। और तीनों ने अपने आप को एक दूसरे का पक्ष रखकर एक दूसरे को बचा लिया। जब तीनों को शेर ने नहीं खाया, तब ऊंट ने भी सोचा कि महाराज मुझे भी नहीं खाएंगे, क्योंकि मैं तो उनका मेहमान हूं। यह सोचकर वो भी बोलने लगा कि महाराज आप मुझे अपना भोजन बना लो। इतना सुनते ही शेर, चीता और सियार उस पर झपट पड़े। इससे पहले कि ऊंट कुछ समझ पाता, उसके प्राण शरीर से निकल चुके थे और चारों उसे अपना भोजन बना चुके थे।

7 अंतर खोजें

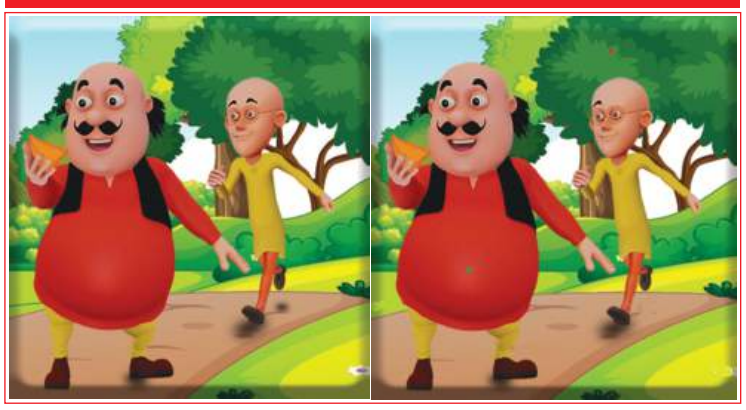

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष — धन प्राप्ति सुगम होगी। पराक्रम बढ़ेगा। जीवनसाथी से आर्थिक मतभेद हो सकते हैं। कामकाज में आशानुरूप स्थिति बनेगी। संतान के व्यवहार पर नजर रखें।

वृषभ — आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी। आपके व्यवहार एवं कार्यकुशलता से अधिकारी वर्ग से लाभ होगा। आपसी विचार-विमर्श लाभप्रद रहेगा। बुरी खबर मिल सकती है।

मिथुन — धनलाभ होगा। प्रसन्नता बनी रहेगी। वाहन सुख मिलेगा। संपत्ति के लेन-देन में सावधानी बरतें। परिवार में सहयोग का वातावरण रहेगा। मेहनत का फल मिलेगा।

कर्क — पुराने मित्र-संबंधी मिलेंगे। व्यवसाय ठीक चलेगा। कार्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में विभिन्न बाधाओं से मन अशांत रहेगा। विवादों से दूर रहना चाहिए। उत्साहवर्द्धक सूचना मिलेगी।

सिंह — अप्रत्याशित लाभ होगा। राजकीय सहयोग मिलेगा। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। जोखिम बिलकुल न लें। धर्म-कर्म में रुचि बढ़ेगी। नए संबंधों के प्रति सतर्क रहें।

कन्या — पारिवारिक जीवन अच्छा रहेगा। रुका पैसा मिलेगा। शत्रु आपकी छवि को धूमिल करने का प्रयास करेंगे। अतः सावधान रहें। फालतू खर्च होगा।

तुला — दांपत्य जीवन सुखद रहेगा। पूंजी निवेश बढ़ेगा। साहित्यिक रुचि बढ़ेगी। आर्थिक योग शुभ हैं। यात्रा से व्यापारिक लाभ हो सकता है। रुका हुआ धन प्राप्त होगा।

वृश्चिक — नए अनुबंध होंगे। प्रतिष्ठा बढ़ेगी। व्यवसाय ठीक चलेगा। निवेश शुभ रहेगा। जल्दबाजी व भागदौड़ से काम करने की प्रवृत्ति पर रोक लगाएँ। अच्छे मित्र से भेंट होगी।

धनु — कार्यसिद्धि होगी। आय-व्यय में संतुलन रहेगा। क्रोध पर संयम आवश्यक है। व्यापार में नए अनुबंध लाभकारी रहेंगे। धर्म में रुचि बढ़ेगी। नई योजना से लाभ होगा।

मकर — संतान की ओर से अच्छे समाचार मिलेंगे। दूसरों के कार्यों में हस्तक्षेप नहीं करें। परिवार की चिंता रहेगी। वाहन व मशीनरी के प्रयोग में सावधानी रखें।

कुम्भ — लाभ होगा। पिछले कार्यों को टालना चाहिए क्योंकि उसमें असफलता का योग है। प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता रहेगी। राजकीय बाधा दूर होगी। व्यवसाय ठीक चलेगा।

मीन — प्रसन्नता रहेगी। संपत्ति के कार्य लाभ देंगे। उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। व्यवसाय ठीक चलेगा। संतान के रोजगार की समस्या का समाधान संभव है।

पहले से भी दमदार रूप में लौटी 'वध 2'

लव फिल्म्स ने अपनी अपकमिंग थ्रिलर-मिस्ट्री फिल्म वध 2 का ट्रेलर रिलीज कर दिया है। संजय मिश्रा और नीना गुप्ता फिल्म के लीड कलाकार हैं। फिल्म को जसपाल सिंह संधू ने लिखा और डायरेक्ट किया है। ट्रेलर में थ्रिल और इमोशनल कॉन्फ्लिक्ट के साथ एक नई कहानी दिखाई गई है। इसकी अहम घटना को अभी भी सस्पेंस में रखा गया है।

वध-2 के ट्रेलर में गंभीर और रियल परफॉर्मेंस देखने को मिलती है, जो फिल्म की इमोशनल गहराई को मजबूती देती है। वध-2 में नीना गुप्ता, संजय मिश्रा, कुमुद मिश्रा, शिल्पा शुक्ला के साथ-साथ नए कलाकार अमित के सिंह, अक्षय डोगरा और योगिता बिहानी भी नजर आएंगी।

फिल्म लेखक और निर्देशक जसपाल सिंह संधू ने वध-2 को लेकर बात की। उन्होंने कहा, वध 2 को इस तरह तैयार किया गया है कि ये मजबूत कहानी और साफ-सुथरे किरदारों के साथ एक अलग अनुभव दे। हमने स्टोरीटेलिंग को एक कदम आगे बढ़ाया है, ताकि दर्शकों को एक लेयर्ड थ्रिलर-मिस्ट्री मिले। ट्रेलर वध 2 की उसी नैतिक रूप से जटिल दुनिया की झलक देता है, जहां सच साफ तौर पर नजर नहीं आता।

फिल्म प्रोड्यूसर लव रंजन ने कहा, वध-2 पहली फिल्म की सोच और इमोशनल गहराई को आगे बढ़ाती है, लेकिन बिल्कुल नई कहानी के साथ। इसकी खास बात ये है कि इस फ्रेंचाइजी शानदार सीनियर एक्टर्स संजय मिश्रा और नीना गुप्ता आगे बढ़ा रहे हैं। उनके साथ कुमुद मिश्रा भी जुड़े हैं। तीनों की दमदार स्क्रीन प्रेजेंस ये साबित करती है कि मजबूत कहानियां उम्र और तय दायरों से ऊपर होती हैं।

प्रोड्यूसर अंकुर गर्ग ने आगे कहा, IFFI में वध 2 को जो रिस्पॉन्स मिला और दर्शकों का वध से जो इमोशनल कनेक्शन रहा है। वो इस फिल्म की दुनिया के साथ उनके मजबूत जुड़ाव को दिखाता है। इससे हमारा ये भरोसा और पक्का होता है कि दर्शक आज भी मायने रखने वाली, किरदारों पर आधारित कहानियां देखना चाहते हैं। वध 2 वही बात आगे बढ़ाती है, जो पहले दर्शकों को वध में पसंद आई थी। साथ ही कुछ नया और असरदार भी पेश करती है।

लव फिल्म्स के बैनर तले बनी वध 2 को जसपाल सिंह संधू ने लिखा और डायरेक्ट किया है। जबकि इसे लव रंजन और अंकुर गर्ग ने प्रोड्यूस किया है। फिल्म 6 फरवरी 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है।

दूसरी बार टली अजय देवगन-रितेश देशमुख की धमाल 4

धमाल फ्रेंचाइजी की चौथी फिल्म 'धमाल 4' को लेकर दर्शकों का इंतजार अभी थोड़ा और बढ़ गया है। इंद्र कुमार के निर्देशन में बन रही इस फिल्म की रिलीज डेट एक बार फिर टाल दी गई है। मेकर्स ने साफ कर दिया है कि फिल्म अब तय तारीख 12 जून को सिनेमाघरों में दस्तक नहीं देगी। पहले फिल्म मार्च में रिलीज होने वाली थी, लेकिन मेकर्स ने इसको टॉक्सिक और धुरंधर के तूफान के बीच रिलीज न करने का फैसला लिया।

सोशल मीडिया पर की गई आधिकारिक घोषणा में बताया गया कि फिल्म अब 3 जुलाई को रिलीज होगी। पोस्ट के साथ मेकर्स ने लिखा कि

धमाल की कॉमेडी के लिए यह नई तारीख ज्यादा मुफीद है और फिल्म इस दिन एक परफेक्ट फैमिली एंटरटेनर के तौर पर दर्शकों के सामने आएगी। यह पहली बार नहीं है जब फिल्म की रिलीज शिफ्ट हुई हो। इससे पहले इसे ईद के मौके पर लाने की तैयारी थी, बाद में 12 जून की डेट फाइनल की गई और अब तीसरी बार तारीख बदली गई है। वजह भले ही सार्वजनिक न की गई हो, लेकिन माना जा रहा है कि बॉक्स ऑफिस पर दूसरी बड़ी फिल्मों से टकराव से बचने के लिए यह कदम उठाया गया है।

धमाल 4' में अजय देवगन इस बार कहानी की कमान संभालते नजर आएंगे। उनके साथ संजय मिश्रा, ईशा गुप्ता, संजीदा शेख, अंजलि आनंद, उपेंद्र लिमये, विजय पाटकर और रवि किशन जैसे कलाकार भी अहम भूमिकाओं में दिखाई देंगे। वहीं रितेश देशमुख, अरशद वारसी और जावेद जाफरी की तिकड़ी एक बार फिर अपनी टाइमिंग और मस्ती से फिल्म में जान डालने वाली है। फिल्म को टी-सीरीज, देवगन फिल्म्स, मारुति इंटरनेशनल और पैनोरमा स्टूडियोज के बैनर तले बनाया गया है। अजय देवगन, भूषण कुमार, कृष्ण कुमार, अशोक ठकेरिया, इंद्र कुमार, आनंद पंडित और कुमार मंगत पाठक इसके निर्माता हैं।

बॉलीवुड | मन की बात

मिमी चक्रवर्ती ने स्टेज परफॉर्मेंस के दौरान उत्पीड़न का लगाया आरोप

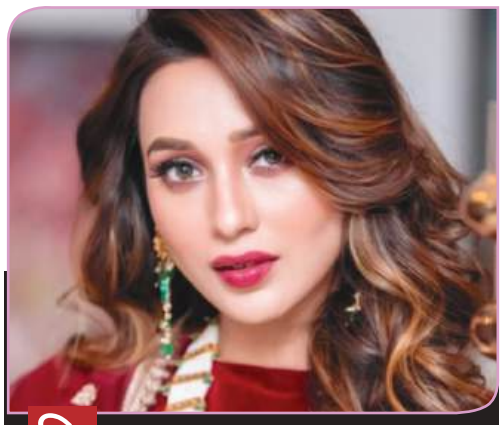

मिमी चक्रवर्ती ने एक लाइव स्टेज शो के दौरान उत्पीड़न और अपमान का आरोप लगाया है। यह घटना रविवार को बनगांव शहर के नयाग्राम इलाके में हुए एक सांस्कृतिक कार्यक्रम में हुई। मिमी की शिकायत के अनुसार, आयोजकों में से एक व्यक्ति तन्मय शास्त्री स्टेज पर चढ़ गया। उसने मिमी की परफॉर्मेंस को बीच में रोक दिया और आधी रात को उन्हें स्टेज से उतरने के लिए कहा। मिमी ने कहा कि इस घटना से उन्हें बहुत अपमान और बुरा लगा। उन्होंने ईमेल के जरिए बनगांव पुलिस स्टेशन में लिखित शिकायत दी। दूसरी तरफ, आयोजक युवक संघ क्लब ने इन आरोपों से इनकार किया है। उनका कहना है कि मिमी तय समय से करीब एक घंटा लेट आईं। तन्मय शास्त्री ने कहा, कार्यक्रम की इजाजत सिर्फ आधी रात तक की थी। इलाके में छात्रों की बोर्ड परीक्षाएं होने वाली हैं, इसलिए कार्यक्रम को समय पर रोकना पड़ा। हमने मिमी का अपमान नहीं किया और न ही उन्हें परेशान किया। उनके आरोप बिल्कुल गलत हैं। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि मिमी के बॉडीगार्ड्स ने क्लब की महिला सदस्यों के साथ बदतमीजी की, जो रात 11:45 बजे उन्हें सम्मान देने स्टेज पर आई थीं। तन्मय शास्त्री ने आगे कहा, हमें पता है कि मिमी एक बड़ी स्टार हैं, लेकिन अगर हम रात 12 बजे के बाद कार्यक्रम चलाते तो पुलिस खुद आकर बंद करवा देती और हम पर केस करती। अगर मिमी को कोई गलतफहमी हुई है या उन्हें बुरा लगा है, तो हम इसके लिए माफी मांगते हैं। पुलिस इस मामले की जांच कर रही है। मिमी चक्रवर्ती एक भारतीय बंगाली अभिनेत्री, गायिका और पूर्व राजनीतिज्ञ हैं। वह मुख्य रूप से टॉलीवुड (बंगाली फिल्म उद्योग) में अपने काम के लिए प्रसिद्ध हैं।

कभी दुनिया पर राज करता था 8 फुट का कनखजूरा, जंगलों में चलती थी हुकूमत

कभी पृथ्वी पर ऐसे जीव राज करते थे जिन्हें देखकर आज का इंसान भी सिहर उठे। छोटे-छोटे कनखजूरे तो हम सबने देखे हैं, लेकिन क्या आप जानते हैं कि 30 करोड़ साल पहले ये कनखजूरे 8 फुट से ज्यादा लंबे होते थे?जी हां, Arthropleura नाम का यह विशालकाय जीव कार्बोनिफेरस काल (346 से 290 मिलियन वर्ष पहले) में पृथ्वी के सबसे बड़े स्थलीय अकशेरुकी (invertebrate) जीव था। यह इतना बड़ा था कि एक इंसान की लंबाई से ज्यादा लंबा और कार जितना चौड़ा लगता था। एक समय में जंगलों में इसकी हुकूमत चलती थी, लेकिन धीरे-धीरे यह पूरी तरह गायब हो गया। Arthropleura एक मिलीपेड (कनखजूरे जैसा) था, लेकिन सामान्य कनखजूरे से हजारों गुना बड़ा था। इसके जीवाश्म बताते हैं कि इसकी लंबाई कम से कम 2 मीटर (6.5फुट) से लेकर 2.5 मीटर (8.2 फुट) तक, कुछ अनुमानों में 2.6 मीटर (8.5 फुट) तक पहुंचती थी। चौड़ाई लगभग 50 सेंटीमीटर और वजन करीब 50 किलोग्राम तक था। यह आज के सबसे बड़े मिलीपेड से भी कई गुना बड़ा था। ब्रिटानिका और विकिपीडिया जैसे स्रोत इसे पृथ्वी का सबसे बड़ा ज्ञात स्थलीय अकशेरुकी मानते हैं। यह जीव कार्बोनिफेरस काल में फला-फूला, जब पृथ्वी के महाद्वीप भूमध्य रेखा के पास थे। वहां घने उष्णकटिबंधीय जंगल थे जहां विशाल फर्न, लाइकोप्सिड और हॉर्सटेल जैसे पौधे होते थे। वातावरण में ऑक्सीजन का स्तर आज के मुकाबले 35% तक ज्यादा था (आज 21 प्रतिशत है)। उच्च ऑक्सीजन से कीटों और अकशेरुकियों का आकार बढ़ जाता है, क्योंकि उनकी सांस लेने की प्रणाली (ट्रेकिया) ऑक्सीजन पर निर्भर होती है। इसी वजह से Arthropleura जैसे दैत्य पैदा हुए थे। Arthropleura शाकाहारी था। यह सड़े हुए पौधों, पत्तियों और लकड़ी के अवशेष खाता था। यह कोई शिकारी नहीं था, बल्कि जंगलों का सफाईकर्मी जैसा था। इसके शरीर पर कठोर खोल था, जो कई खंडों में बंटा हुआ था जैसे कोई आर्मर हो। इसके सैंक ?ें पैर थे, लेकिन यह धीरे-धीरे चलता था। इसके कोई दांत या नुकीले हिस्से नहीं थे, इसलिए यह खतरनाक नहीं था, बस आकार से डरावना लगता था। 1990 के दशक में स्कॉटलैंड और अन्य जगहों पर इसके जीवाश्म मिले थे। 2021 में उत्तरी इंग्लैंड में एक बड़ा जीवाश्म मिला था जो कार जितना लंबा था। वैज्ञानिकों ने पुष्टि की कि पूरा जीव 2.63 मीटर लंबा और 50 किलो वजन का रहा होगा। हाल के अध्ययनों में इसके चेहरे की संरचना भी सामने आई, जो बताती है कि यह मिलीपेड जैसा ही था, लेकिन बहुत बड़ा था।

अजब-गजब | भूकंप-तूफान भी नहीं हिला सकता इस घर को

बिना सीमेंट सरिया, स्टील का बना है देश का सबसे सस्ता घर, एसी-हीटर की भी नहीं पड़ेगी जरूरत

जब मकान बनाने के लिए न सरिया चाहिए, न सीमेंट, न स्टील और न ही प्लास्टर, तब समझ लीजिए कुछ बड़ा और नया हुआ है। देश में पहली बार ऐसा इको-फ्रेंडली घर तैयार किया गया है, जिसकी लागत महज डेढ़ से ढाई लाख रुपये है। पर्यावरण के साथ-साथ जेब का भी ख्याल रखने वाला यह घर आने वाले समय में आम लोगों के लिए आवास की तस्वीर बदल सकता है। ऐसे में अब अपने सपनों का आशियाना लेना अब आसान होने जा रहा है। दरअसल, एनटीपीसी ने देश का पहला इको फ्रेंडली घर बना दिया है। जो बिना सीमेंट, सरिया, स्टील और प्लास्टर के तैयार होता है। सबसे खास बात ये है कि ये घर भूकंप, आंधी और तूफान में भी मजबूती से खड़ा रहेगा। यह घर सर्दियों में गर्म तो गर्मियों में ठंडा रहेगा। आइये जानते हैं इस घर का निर्माण कैसे किया गया है।

देश के पहले इको फ्रेंडली घर की कीमत आप सुनकर दंग रह जाएंगे। इसकी कीमत प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत मात्र डेढ़ लाख रुपये रखी गई है। जबकि देश के किसी भी कोने में कोई भी देशवासी इस घर को

बनवाना चाहता है तो उसे ढाई लाख रुपए देने होंगे। इस घर में एक बेडरूम, एक रसोई, टॉयलेट और बाथरूम के साथ आपको एक हॉल भी मिलेगा।

यह जानकारी एनटीपीसी के वरिष्ठ अधिकारी राजीव सत्यकाम ने लोकल 18 को दी। उन्होंने बताया कि यह घर 300 स्क्वायर फीट का है, जिसकी कीमत डेढ़ लाख रुपये है। यानी कुल मिलाकर डेढ़ से ढाई लाख रुपए में आपको इको फ्रेंडली घर मिल जाएगा। आपको खुद का आशियाना मिल जाएगा और आपको किराए के मकान में रहने की जरूरत नहीं पड़ेगी। यह घर आपको गर्मियों में ठंडा और सर्दियों में गर्म रखेगा। ऐसे में आपको एयर कंडीशनर लगाने तक की जरूरत नहीं पड़ेगी। राजीव सत्यकाम ने बताया कि आपको जानकर हैरानी होगी कि इस घर में किसी भी तरह का कोई सीमेंट, सरिया, स्टील या प्लास्टर का इस्तेमाल नहीं किया गया है। बल्कि इस घर को राख से बनाया गया है। यानी जो राख इंडस्ट्रियल एरिया से निकलती है उसी राख से इंटरलॉकिंग वॉल ब्लॉक्स बनाए गए हैं। यानी जो राख इंडस्ट्रियल एरिया से निकलती है। उस राख से इंटरलॉकिंग वॉल ब्लॉक्स बनाए गए हैं। जिसको आप साधारण भाषा में ईंटें कह सकते हैं। इस ब्लॉक्स की खासियत यह होती है कि इसको एक के ऊपर एक जब रखा जाता है तो यह किसी ताले की तरह ही लॉक हो जाते हैं, जिस वजह से इनमें सीमेंट, प्लास्टर या सरिया लगाने की जरूरत नहीं पड़ती है। राख के बने हुए यह इंटरलॉकिंग वॉल ब्लॉक्स इतने मजबूत होते हैं कि यह आंधी, तूफान और भूकंप से भी लड़ सकते हैं। उन्होंने बताया कि यह घर मध्यम वर्गीय परिवारों के लिए उनके सपनों का आशियाना होगा।

बंगाल चुनावों से पहले अशांति फैलाना चाहता है विपक्ष : ममता

» सीएम ने ऐसे लोगों के खिलाफ दी चेतावनी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने चेतावनी दी कि आगामी चुनावों से पहले राज्य में अशांति फैलाने के प्रयास किए जा रहे हैं और उन्होंने लोगों से शांति बनाए रखने और उकसावे में न आने की अपील की। किसी का नाम लिए बिना बनर्जी ने दावा किया कि कुछ ताकतें चुनावी लाभ के लिए राज्य में अशांति फैलाने की कोशिश कर रही हैं। बंगाल में कुछ ही महीनों में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं।

दक्षिण कोलकाता के सिरिटी में पुनर्निर्मित शवदाह गृह का डिजिटल माध्यम से उद्घाटन करने और शहर के दक्षिणी भाग में ही वाटगंज के दोई घाट में एक नए शवदाह गृह की आधारशिला रखने के बाद वह राज्य सचिवालय में एक बैठक को संबोधित कर रही थीं। मुख्यमंत्री ने कहा, कुछ लोग चुनावी लाभ के लिए दंगे भड़काने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन हमें एक साथ रहना है। यह बंगाल सबका है। तृणमूल कांग्रेस प्रमुख ने कहा कि अगर किसी खास समुदाय के साथ कोई अप्रिय घटना होती है, तो सड़कें और रेल की पटरियां अवरुद्ध हो जाती हैं और वह नहीं चाहतीं कि ऐसी स्थिति उत्पन्न हो।

मतदान अधिकार छीन रहा आयोग

ममता बनर्जी ने चुनाव आयोग पर तीखा हमला करते हुए उस पर लोगों के मतदान अधिकार छीनने का आरोप लगाया। एक्स पर एक पोस्ट में ममता बनर्जी ने कहा कि वह चुनाव आयोग के आचरण से गहराई से व्यथित हैं और आरोप लगाया कि चुनाव निकाय मतदाता सूचियों में तार्किक विसंगति के नाम पर लोगों को परेशान कर रहा है। भारत निर्वाचन आयोग आज राष्ट्रीय मतदाता दिवस मना रहा है, और यह कितना दुखद तमाशा है! आयोग, जो अपने आकाओं की आवाज़ बनकर लोगों के मतदान अधिकारों को छीनने में व्यस्त है, मतदाता दिवस मनाने की हिम्मत कर रहा है! मैं आज उनके इस आचरण से अत्यंत व्यथित और विचलित हूं।

सभी लोग सद्भाव से एक साथ रहें

उन्होंने कहा, मैं चाहती हूं कि सभी लोग सद्भाव से एक साथ रहें। बंगाल की मुख्यमंत्री ने राज्य के औद्योगिक विकास पर भी प्रकाश डाला और कहा कि तेजी से विकास हुआ है। बनर्जी ने कहा, कितनी सारी चीजें विकसित हो चुकी हैं। इको पार्क, वैक्स म्यूजियम, छह आर्थिक गलियारे, कई विश्वविद्यालय और 43 मल्टी-सुपर-स्पेशियलिटी अस्पताल बन चुके हैं। हमारे पास कई कारखाने हैं। जब मैं हावड़ा से दुर्गापुर तक कार से जाती हूं तो मुझे कोई खाली जगह नजर नहीं आती। उन्होंने कहा कि स्थिर वातावरण के कारण उद्योग राज्य में बने हुए हैं।

दूसरे राज्य के लोग भी यहां खुश

तृणमूल प्रमुख ने कहा, जो लोग व्यापार करते हैं वे नहीं जा रहे हैं। वे क्यों जाएंगे? यहां उद्योग स्थापित हो चुके हैं। उन्होंने कहा, अन्य राज्यों के लगभग 1.5 करोड़ लोग बंगाल में काम करते हैं, लेकिन यहां कोई उन्हें परेशान नहीं करता। लेकिन जब हमारे मजदूर राज्य से बाहर काम करने जाते हैं, तो उन्हें गंभीर अत्याचारों का सामना करना पड़ता है। मौजूदा स्थिति को देखते हुए बनर्जी ने प्रवासी श्रमिकों से बंगाल लौटने का आग्रह किया और उन्हें आश्वासन दिया कि राज्य में रोजगार के अवसर सृजित किए जाएंगे। एक भी हड़ताल नहीं हुई है। मैं हड़तालों के खिलाफ हूं और मैं आपको विश्वास दिलाती हूं कि एक भी हड़ताल नहीं होगी। निवेशों का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि अकेले पुरुलिया जिले में 72,000 करोड़ रुपये की परियोजनाओं पर काम हो रहा है। बनर्जी ने अन्य राज्यों में पश्चिम बंगाल के प्रवासी श्रमिकों के कथित उत्पीड़न पर भी चिंता व्यक्त की।

राजनीति षड्यंत्रों से भरी है, खुद नहीं लड़ूंगा चुनाव : दिनाकरन

» कहा- सेंगोत्तैयान के साथ मेरा भाई जैसा रिश्ता है

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। अम्मा मक्कल मुन्नेत्र कजगम (एएमएमके) पार्टी के महासचिव टीटीवी दिनाकरन ने तमिलनाडु विधानसभा चुनाव से पहले कई पार्टियों के साथ गठबंधन वार्ता की संभावना जताई, साथ ही यह स्पष्ट किया कि वे इस चुनाव में चुनाव नहीं लड़ेंगे। दिनाकरन ने कहा कि मदुरै और तिरुनेलवेली क्षेत्रों से हमारी पार्टी के नेता आ चुके हैं और उनके साथ चुनाव रणनीतियों पर चर्चा चल रही है। दिनाकरन ने तमिलगा वेट्री कज़गम के नेता के ए सेंगोत्तैयान के साथ अपने संबंधों के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि सेंगोत्तैयान के साथ मेरा भाई जैसा रिश्ता है। टीवीके में शामिल होने से दो दिन पहले उन्होंने मुझे व्यक्तिगत रूप से अपने फैसले की जानकारी दी थी।

वे चाहते थे कि मैं टीवीके गठबंधन में शामिल हो जाऊं। मैं उन्हें मना नहीं कर सका और इसलिए मैंने उनसे कहा, देखते हैं। सेंगोत्तैयान को पूरा भरोसा था कि मैं अंतत: टीवीके गठबंधन में शामिल हो जाऊंगा। दिनाकरन ने संकेत दिया कि एएमएमके गठबंधन में शामिल होने के इच्छुक दलों के साथ बातचीत चल रही है। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि राजनीति षड्यंत्रों और साजिशों से भरा क्षेत्र है। सत्ता और शासन की बात आती है तो कई मुद्दे उठते हैं। ऐसी जटिलताओं से बचने और स्वस्थ संबंध बनाए रखने के लिए मैंने इस चुनाव में चुनाव न लड़ने का फैसला किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि गठबंधन वार्ता के लिए उनकी कोई शर्त नहीं है, और कहा कि वे जयललिता के शासन को वापस लाने के उद्देश्य से हमारे पास आए थे। एडप्पाडी के. पलानीस्वामी की सहमति से मेरे साथ गठबंधन वार्ता हुई।

भारत का न्यूजीलैंड से चौथा टी20 मैच आज

» सीरीज में क्लीन स्वीप की ओर एक और कदम बढ़ायेगी भारतीय टीम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

विशाखापत्तनम। विशाखापत्तनम में बुधवार को जब भारतीय टीम न्यूजीलैंड के खिलाफ सीरीज के चौथे टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच में मैदान पर उतरेगी तो उसकी नजरें क्लीन स्वीप के एक कदम और करीब पहुंचने पर होगी। भारतीय टीम ने इस सीरीज में सभी विभागों में दमदार प्रदर्शन किया है। हालांकि, स्पिनरों ने टेंशन जरूर बढ़ाई है। इसके अलावा तीनों मैचों में संजू का फ्लॉप होना भी मैनेजमेंट के लिए एक सवाल है। ईशान नंबर-3 पर खेलने उतरे थे, और उन्होंने धमाकेदार बल्लेबाजी कर अपनी दावेदारी मजबूत की है।

ऐसे में यह भी देखने वाली बात होगी कि क्या टीम मैनेजमेंट ईशान और अभिषेक की जोड़ी से ओपनिंग करवाता या है नहीं। भारतीय टीम पहले ही पांच मैचों की सीरीज में 3-0 की अजेय बढ़त बनाई हुई है और चौथे टी20 अंतरराष्ट्रीय में वो आखिरी के चेकबॉक्स को जरूर टिक करना चाहेगी। इस सीरीज का आखिरी मुकाबला 31 जनवरी को होगा। जिसके बाद टीम इंडिया अपने वर्ल्ड कप की तैयारियों में जुट जाएगी। बात अगर हेड-टू-हेड रिकॉर्ड की करें तो दोनों देश अभी तक 28 टी20 अंतरराष्ट्रीय में आमने-सामने आए हैं। इस दौरान भारत ने 17 मैच जीते हैं जबकि न्यूजीलैंड 10 मैच अपने नाम करने में सफल हुई है। वहीं एक मैच टाई रहा है। यह मुकाबला भी हाई स्कोरिंग हो सकता है। वाईएस राजशेखर रेड्डी एसीए-वीडीसीए क्रिकेट स्टेडियम की पिच बल्लेबाजों के लिए अच्छी मानी जाती है और यहां खूब रन बनते हैं। पिच पर अच्छी गति और उछाल है, जिससे रन बनाना बेहद आसान हो जाता है। हालांकि बड़ी बाउंड्री थोड़ी चुनौती पेश कर सकती हैं। इस मैदान पर पहली पारी का औसत स्कोर 148 है। जबकि उच्चतम स्कोर 215 है।

अंडर-19 विश्वकप: सेमीफाइनल के करीब पहुंचा भारत

बुलावायो। अंडर-19 विश्व कप रोमांच जारी है। सुपर-सिक्स मुकाबले में भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए विहान मल्होत्रा के नाबाद शतक और वैभव सूर्यवंशी के अर्धशतक की मदद से 50 ओवर में आठ विकेट पर 352 रन बनाए। जवाब में जिम्बाब्वे की टीम 37.4 ओवर में सिर्फ 148 रन ही बना सकी और ऑलआउट हो गई। उनके लिए लीरॉय चिवाला ने 77 गेंदों पर सात चौकों और एक छक्के की मदद से 62 रन बनाए। हालांकि, लीरॉय की यह पारी भी टीम को जीत नहीं दिला सकी। भारत इस जीत के साथ सेमीफाइनल के करीब पहुंच गया है। अब उसका सामना 1 फरवरी को पाकिस्तान से होगा। भारतीय अंडर-19 टीम यह मुकाबला जीतकर सेमीफाइनल में प्रवेश करना चाहेगी।

दूरदर्शिता से परिपूर्ण एक अनुभवी नेता थे पवार

» राहुल गांधी और खरगे ने जताया दुख

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजित पवार का विमान दुर्घटना में दुखद निधन हो गया, जिस पर कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और राहुल गांधी ने गहरा शोक व्यक्त किया है। उन्होंने पवार को ईमानदारी और दूरदर्शिता से परिपूर्ण एक अनुभवी राजनीतिज्ञ के रूप में याद करते हुए उनके परिवार के प्रति संवेदनाएं प्रकट कीं।राज्यसभा में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खरगे और लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने बुधवार को महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री अजित पवार के निधन पर शोक व्यक्त किया, जिनका आज सुबह विमान दुर्घटना में निधन हो गया।

पवार के असामयिक निधन पर शोक व्यक्त करते हुए कांग्रेस अध्यक्ष खर्गे ने कहा कि उन्हें एक अनुभवी राजनीतिज्ञ के रूप में याद किया जाएगा, जिन्होंने ईमानदारी और सूझबूझ से काम किया। खरगे ने एक्स पर लिखा कि विमान दुर्घटना में अजीत पवार के दुखद निधन की खबर बेहद चौंकाने वाली और बेहद दुखद है। यह एक ऐसे नेता का असामयिक देहांत है जिनका राजनीतिक करियर लंबा और उज्ज्वल था। इस कठिन घड़ी में शोक संतप्त परिवार जिस अपार दु:ख से गुजर रहा है, उसे शब्दों में बयां करना मुश्किल है। कांग्रेस अध्यक्ष ने लिखा कि मैं पूरे पवार परिवार, उनके समर्थकों और शुभचिंतकों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करता हूं।

महाराष्ट्र ने अपनी रीढ़ खो दी : संजय राउत

मुंबई। महाराष्ट्र की राजनीति के दो अलग किनारों पर होने के बावजूद, शिवसेना (यूबीटी) के सांसद संजय राउत ने अजीत पवार के निधन पर अपनी संवेदनाएं व्यक्त करते हुए उन्हें राज्य का सबसे मजबूत स्तंभ बताया। राउत ने मीडिया से बात करते हुए कहा कि अजीत दादा के बिना महाराष्ट्र का राजनीतिक और सामाजिक परिदृश्य अब बेचव और अळणी (फीका और बेस्वाद) हो गया है। राउत ने बताया कि जैसे ही बारामती में विमान दुर्घटना की खबर आई, वे और उनका पूरा दल दादा के सकुशल होने की प्रार्थना कर रहा था। उन्होंने कहा, हमें लगा था कि वे इस संकट से भी बाहर निकल आएंगे, लेकिन नियति को कुछ और ही मंजूर था। यह महाराष्ट्र के लिए एक अत्यंत काला दिन है। राउत ने कहा कि राज्य पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है। उन्होंने कहा कि अजीत पवार की प्रशासन पर मजबूत पकड़ थी और बारामती से उनका गहरा जुड़ाव था। उन्होंने याद किया कि ठाकरे के नेतृत्व वाली कैबिनेट के दौरान, अजीत पवार उपमुख्यमंत्री थे और कैबिनेट को आकार देने में उनकी अहम भूमिका थी।

कर्नाटक के आबकारी मंत्री रामप्पा पर भाजपा का वार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी के नेता अरविंद बेल्लाड ने बुधवार को कर्नाटक के आबकारी मंत्री रामप्पा तिम्मापुर के इस्तीफे की मांग की, क्योंकि उनके विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों को बार लाइसेंस जारी करने के बदले रिश्वत लेते हुए पकड़ा गया था। बेल्लाड ने कहा कि कांग्रेस पार्टी छोटी-छोटी घटनाओं में भी विभिन्न लोगों के इस्तीफे की मांग करती रही है, और उन्होंने जोर देकर कहा कि तिम्मापुर के मामले में उनके खिलाफ ठोस सबूत हैं, जिसके कारण उन्हें इस्तीफा दे देना चाहिए।

बेल्लाड ने एएनआई को बताया उनके विभाग में हुए घोटाले के लिए उन्हें इस्तीफा देना होगा। छोटी से छोटी घटना में भी कांग्रेस ने कई लोगों के इस्तीफे की मांग की है यहां कई ठोस सबूत हैं, और तिम्मापुर को इस्तीफा देना ही होगा। कर्नाटक भाजपा के अध्यक्ष बीवाई विजयेंद्र ने 6,000 करोड़ रुपये से अधिक के आबकारी घोटाले की उचित जांच की मांग की और साथ ही राज्य के आबकारी मंत्री रामप्पा तिम्मापुर के इस्तीफे पर भी जोर दिया।

सड़क सुरक्षा माह में किए गए 70 लोगों के नेत्र परीक्षण

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

गाजीपुर। पूरे प्रदेश में सड़क सुरक्षा माह मनाया जा रहा है। इसके अंतर्गत लोगों को सड़क पर चलने व ट्रैफिक संबंधी जानकारी के साथ उन्हें जागरूक किया जा रहा है। साथ ही साथ लोगों की फिटनेस भी जांची जा रही है। इसी क्रम में गाजीपुर के एआरटीओ कार्यालय व परिवहन निगम ने मिलकर नेत्र परीक्षण करवाए।

इसमें 70 से ज्यादा लोगों का नेत्र परीक्षण हुआ। नेत्र परीक्षण में जानेमाने नेत्र चिकित्सकों ने अपनी सेवाएं दीं। इसका उद्घाटन एआरटीओ धनबीर यादव व एआरएम लव कुमार सिंह ने किया। इस अवसर पर कार्यालय के सभी कर्मचारी भी मौजूद रहे।

राष्ट्रपति के अभिभाषण के साथ बजट सत्र का आगाज

» संसद में रखा सरकार का एजेंडा, विपक्ष ने एसआईआर व मनरेगा पर चर्चा की मांग की

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के अभिभाषण के साथ ही बजट सत्र आज से आरंभ हो गया। इससे पहले विपक्ष ने कई एसआईआर से लेकर मनरेगा पर चर्चा कराने की मां की है। सत्र को सही से चलाने के लिए रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने विपक्ष के साथ बैठक की। बुधवार को संसद को संबोधित करते हुए राष्ट्रपति ने सरकार की सामाजिक न्याय के प्रति प्रतिबद्धता को रेखांकित किया। उन्होंने पिछले दशक में 25 करोड़ लोगों को गरीबी से बाहर निकालने और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के विस्तार जैसी उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। हालांकि बीवीरामजी का जिक्र आते ही विपक्ष खड़ा हो गया। अब कल सदन चलेगा।

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने बुधवार को संसद के संयुक्त सत्र को संबोधित करते हुए बजट सत्र 2026-27 के पहले दिन सामाजिक न्याय, समावेशी विकास और विकसित भारत के लिए केंद्र सरकार के दृष्टिकोण को रेखांकित किया। राष्ट्रपति ने लोकसभा कक्ष में दोनों सदनों के सदस्यों को संबोधित किया, जो 18वीं लोकसभा के सातवें सत्र और राज्यसभा के 270वें सत्र के उद्घाटन दिवस पर एक साथ उपस्थित थे। अपने संबोधन में राष्ट्रपति मुर्मू ने कहा कि उन्हें संसद को संबोधित करते हुए प्रसन्नता हो रही है और उन्होंने याद दिलाया कि पिछला वर्ष भारत की तीव्र प्रगति और समृद्ध विरासत का जश्न मनाने के लिए यादगार रहा। उन्होंने उल्लेख किया कि वंदे मातरम के 150 वर्ष पूरे देश में मनाए गए, जिसमें नागरिकों ने बंकिम चंद्र चटर्जी को श्रद्धांजलि अर्पित की। मेरी सरकार दलितों, पिछड़ों, आदिवासी समुदाय और सभी के लिए पूरी संवेदनशीलता के साथ काम कर रही है। सबका साथ सबका विकास का दृष्टिकोण प्रत्येक नागरिक के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव डाल रहा है। 2014 की शुरुआत में, सामाजिक सुरक्षा योजनाएं केवल 25 करोड़ नागरिकों तक ही पहुंच पाई थीं। सरकार के प्रयासों से अब लगभग 95 करोड़ भारतीयों को सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का लाभ मिल रहा है।

राजनाथ की अध्यक्षता में सर्वदलीय बैठक

सत्र से पहले एजेंडे की रूपरेखा तैयार करने के लिए रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह की अध्यक्षता में एक सर्वदलीय बैठक हुई। कांग्रेस सांसद मनिकम टैगोर ने कहा कि पार्टी कार्यवाही के दौरान सहयोग का आश्वासन देते हुए कथित वोट चोरी, एसआईआर अभ्यास, धान खरीद और मनरेगा फोकस की बहाली सहित जन-केंद्रित मुद्दों को उठाएगी।

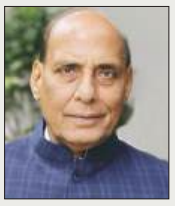

राजकोषीय प्रस्तावों से पहले देश के ज्वलंत मुद्दों का समाधान करे सरकार: इमरान मसूद

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। संसद के बजट सत्र से पहले, कांग्रेस सांसद इमरान मसूद ने भाजपा के नेतृत्व वाली सरकार पर तीखा हमला बोलते हुए उसकी प्राथमिकताओं और इरादों पर सवाल उठाए। मसूद ने कहा कि सरकार को राजकोषीय प्रस्तावों को पेश करने से पहले देश के ज्वलंत मुद्दों का समाधान करना चाहिए।

उत्तर प्रदेश में हाल ही में हुए घटनाक्रमों पर प्रतिक्रिया देते हुए मसूद ने स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद का जिक्र किया और राज्य सरकार की कार्रवाई की आलोचना की। उन्होंने कहा, देखते हैं वे इस बजट में क्या लाते हैं। इस समय देश का ज्वलंत मुद्दा स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद हैं। उत्तर प्रदेश सरकार को उनसे उनकी उपाधि के बारे में पूछने का क्या अधिकार है? भारत की संसद का बजट सत्र आज राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के लोकसभा और राज्यसभा के संयुक्त सत्र को संबोधित करने के साथ शुरू होगा। भारत का आर्थिक सर्वेक्षण 29 जनवरी को पेश किया जाएगा, जिसमें 2025-26 के लिए अर्थव्यवस्था का विस्तृत आकलन और अगले वित्तीय वर्ष के लिए अनुमान प्रस्तुत किए जाएंगे। 2026-27 का केंद्रीय बजट 1 फरवरी को पेश किया जाना है। सत्र 65 दिनों में फैले 30 सत्रों के साथ 2 अप्रैल को समाप्त होगा। दोनों सदन 13 फरवरी को अवकाश के लिए स्थगित होंगे और 9 मार्च को पुनः सत्र शुरू करेंगे, जिससे स्थायी समितियों को विभिन्न मंत्रालयों के अनुदान अनुरोधों की जांच करने का अवसर मिलेगा।

मसूद ने आगे आरोप लगाया कि पहचान, धर्म और मतदान के अधिकार को आपस में जोड़ने के प्रयास बेहद चिंताजनक हैं। उन्होंने कहा, मतदान करने के लिए आपको यह साबित करना होगा कि आप वैध मतदाता हैं। लेकिन यह पूछना कि आप हिंदू हैं या नहीं, समझ से परे है। वे देश में क्या करना चाहते हैं? वे क्या बदलाव लाना चाहते हैं?

बांग्लादेश ने रद्द किया प्रोजेक्ट इंडियन इकोनॉमिक जोन

» ट्रंप के टैरिफ अटैक के बाद भारत को आर्थिक मोर्चा में दूसरा बड़ा झटका

» इंडस्ट्रीयल जोन की जगह बंग्लादेश ने टांग दिया डिफेस जोन का बोर्ड

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। बांग्लादेश द्वारा इंडियन इकोनॉमिक ज़ोन प्रोजेक्ट के रद्द होने से भारत के लिए यह सिर्फ़ एक प्रोजेक्ट का नुकसान नहीं है बल्कि रणनीतिक आर्थिक और कूटनीतिक तीनों मोर्चो पर झटका माना जा रहाहै। जिस जमीन पर भारतीय पूंजी से फैक्ट्रियों की नींव पड़नी थी जहां हजारों करोड़ के निवेश और हजारों रोजगार की कहानियां गढ़ी जानी थीं उसी ज़मीन पर अब तोपों गोला बारूद और रक्षा उद्योग का बोर्ड टंग दिया गया है। और यह सब उस देश में हुआ है जिसे भारत पिछले एक दशक से सबसे भरोसेमंद पड़ोसी बताता आया है।

घरेलू मोर्चे पर असर

आईईजेड का रद्द होना सिर्फ विदेश नीति का झटका नहीं है। इस प्रोजेक्ट के बंद होने से भारत की ग्रोथ विंडो पर असर पड़ेगा यानि कि भारतीय अर्थव्यवस्था में इस फैसले का निगेटिव इम्पैक्ट आना तय है। क्योंकि विदेशी निवेश पहले ही दबाव में चल रहा है। रुपया डालर के सामने लड़खड़ा रहा है और सोना चांदी रिकार्ड ऊंचाई पर है। वहीं ईयू ट्रेड डील से सस्ते आयात का एक अनजाना डर भी जन्म ले चुका है और अब पड़ोस में भारतीय उद्योग के लिए दरवाज़े बंद यह सब बजट से ठीक पहले हो रहा है। जहां सरकार मेक इन इंडिया का ढोल पीटने वाली है लेकिन पड़ोसी देश मेक विदाउट इंडिया का बोर्ड टांग चुके हैं।

दोस्ती की पिच पर बेवफाई की बाउंसर

हर राजनीतिक कहानी में एक मोड़ आता है जहां तर्क चुप हो जाते हैं और इशारे बोलने लगते हैं। बांग्लादेश द्वारा इंडियन इकोनॉमिक ज़ोन को रद्द करने की कहानी भी वहीं पहुंच चुकी है। ऊपर से तो यह फैसला औद्योगिक नीति का लगता है। लेकिन भीतर उतरिए तो यह रिश्तों की टूटी हुई हड्डियों की आवाज़ से ज्यादा कुछ नहीं। भारत और बांग्लादेश के रिश्ते भरोसे से शुरू हुए थे। शेख़ हसीना के दौर में भारत ने ढाका को वह समर्थन दिया जो कोई पड़ोसी नहीं देता। राजनीतिक संरक्षण कूटनीतिक ढाल अंतरराष्ट्रीय मंचों पर बचाव। लेकिन राजनीति में हर एहसान ब्याज के साथ लौटता है और कई बार वही ब्याज रिश्ते डुबो देता है।

बांग्लादेश की अंतरिम सरकार में राष्ट्रीय मुख्य सलाहकार प्रोफेसर मोहम्मद यूनुस ने चटगांव मीरसराय में भारत के सहयोग से बनने जा रहे इकोनमिक जोन को बांग्लादेश आर्थिक ज़ोन प्राधिकरण बीईजेडए की एक अहम बैठक में न बनने का एलान कर सभी को चौका दिया है। चटगांव में बंद हुआ यह ज़ोन दरअसल भारतीय प्रभाव के सिमटने की पहली सार्वजनिक घोषणा है। और यह घोषणा बेहद शोर के साथ नहीं बल्कि नीतिगत खामोशी और रणनीतिक बेरुख़ी के साथ की गयी है जो कहीं ज़्यादा खतरनाक है।

अब... डिफेंस इंडस्ट्रीयल जोन: चटगांव-मीरसराय का इंडियन इकोनामिक जोन कागज पर एक औद्योगिक परियोजना थी। लेकिन जमीन पर वह भारत की साफ्ट पावर की प्रयोगशाला। 1000 एकड़ से ज्यादा क्षेत्र में बनने वाले इस प्रोजेक्ट की अनुमानित लागत लगभग 8 से 10 अरब डालर का निवेश माना जा रहा था। इस प्रोजक्ट में टेक्सटाइल, फार्मा, आटो कंपोनेंट्स आदि की कंपनियों को लगना था। बदली परिस्थितियों में ढाका ने साझेदारी नहीं संदेह को चुना।

डिफेंस इंडस्ट्रियल ज़ोन का ऐलान यह बता रहा है कि बांग्लादेश अब अपनी ज़मीन पर भारतीय पूंजी नहीं रणनीतिक हथियार चाहता है। और यह बदलाव तब हुआ जब क्षेत्र में चीन पहले से हथियार बंदरगाह और कर्ज़ के साथ मौजूद है।

मणिपुर में पीड़ितों को मिलती रहेगी राहत

» सुप्रीम कोर्ट ने उच्च-स्तरीय समिति का कार्यकाल बढ़ाया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने बुधवार को मणिपुर में राहत और पुनर्वास उपायों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने के लिए गठित सेवानिवृत्त न्यायाधीशों की उच्च-स्तरीय समिति का कार्यकाल 31 जुलाई, 2026 तक बढ़ा दिया, जहां मई 2023 से जातीय हिंसा जारी है।

भारत के मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत और न्यायमूर्ति जॉयमाल्य बागची की पीठ ने कहा कि मामले के तथ्यों को देखते हुए समिति का निरंतरता आवश्यक है और उससे निर्धारित अवधि के भीतर अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने का आग्रह किया। वरिष्ठ अधिवक्ता विभा दत्ता मखीजा द्वारा समिति की ओर से पेश होने पर अदालत को सूचित किया गया कि समिति ने अभी तक अपना निर्धारित कार्य पूरा नहीं किया है, जिसके बाद समय सीमा में विस्तार दिया गया। सुनवाई के दौरान अटॉर्नी जनरल आर वेंकटरामानी भी उपस्थित थे।

यूजीसी मामले में सुप्रीम कोर्ट सुनवाई को तैयार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सर्वोच्च न्यायालय ने बुधवार को विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (उच्च शिक्षा संस्थानों में समानता को बढ़ावा देना) विनियम, 2026 की संवैधानिक वैधता को चुनौती देने वाली याचिका पर तत्काल सुनवाई करने पर सहमति व्यक्त की, क्योंकि शैक्षणिक परिसरों में जाति-आधारित भेदभाव को दूर करने के उद्देश्य से बनाए गए नए ढांचे को लेकर विवाद बढ़ता जा रहा है।

यह घटनाक्रम तब सामने आया जब सामाजिक कार्यकर्ता और उद्यमी राहुल दीवान की ओर से अधिवक्ता पार्थ यादव ने भारत के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई) सूर्यकांत के समक्ष याचिका का जिक्र किया। यादव ने अदालत से मामले पर तत्काल सुनवाई करने का आग्रह करते हुए कहा कि नियमों के लागू होने से भेदभाव होगा और इस मुद्दे पर तत्काल न्यायिक जांच की आवश्यकता है। अनुरोध का जवाब देते हुए, मुख्य न्यायाधीश कांत ने सुनवाई की तारीख जल्द तय करने पर विचार करने की सहमति जताई और वकीलों से याचिका में मौजूद सभी खामियों को दूर करने को कहा ताकि मामले को सूचीबद्ध किया जा सके।

दीवान की याचिका उन कम से कम तीन चुनौतियों में से एक है जो 2026 के नियमों के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट पहुंची हैं। इन नियमों को यूजीसी ने 1× जनवरी को अधिसूचित किया था और इसके तहत 2012 के ढांचे को प्रतिस्थापित किया गया था। इनमें से एक याचिका उत्तर प्रदेश के बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में पोस्ट-डॉक्टरल शोधकर्ता मृत्युंजय तिवारी ने दायर की है। दूसरी याचिका मंगलवार सुबह अधिवक्ता विनीत जिंदल ने दायर की।

शबरीमाला स्वर्ण चोरी मामले को लेकर केरल विस में हंगामा

» विपक्ष ने सरकार को घेरा देवस्वोम मंत्री के इस्तीफे पर अड़ा यूडीएफ

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। केरल विधानसभा की कार्यवाही बुधवार को शुरू हुई। विष्णुनाथ ने बताया कि देवस्वम मंत्री को इस्तीफा देना चाहिए, क्योंकि वे भी इस साजिश और सोने की चोरी में शामिल हैं। पहले हमारी मांग देवस्वम मंत्री और देवस्वम बोर्ड अध्यक्ष को हटाने की थी, जो पहले ही पूरी हो चुकी है। अब हमारी अगली मांग पर जोर दिया जा रहा है। जो कुछ भी हो रहा है, वह सरकार की जानकारी में है।

राज्य देवस्वम मंत्री (वी एन वासवन) इस साजिश में शामिल थे, और हम इस पर आगे कोई चर्चा नहीं चाहते। हम विधानसभा में विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं। विपक्ष ने सबरीमाला स्वर्ण चोरी मामले को लेकर केरल सरकार पर अपना हमला तेज कर दिया और राज्य के देवस्वम मंत्री वीएन वासवन के इस्तीफे की मांग दोहराते हुए कहा कि इस मुद्दे पर कोई समझौता नहीं होगा। कांग्रेस विधायक सीआर महेश और नजीब कंथापुरम ने लगातार दूसरे दिन केरल विधानसभा में सत्याग्रह जारी रखते हुए सरकार से जवाबदेही और तत्काल कार्रवाई की मांग की। विपक्ष ने मामले के संचालन में गंभीर चूक का आरोप लगाया और कहा कि निष्पक्ष जांच सुनिश्चित करने के लिए मंत्री का इस्तीफा अनिवार्य है।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित एवं 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। महाराष्ट्र कार्यालय:- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। संपादक - संजय शर्मा, विधि सलाहकार: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, वित्तीय सलाहकार: संदीप बंसल, कार्टूनिस्ट: हसन जैदी, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in | RNI-UPHIN/2015/62233 डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।